विशद
पंच तीर्थ क्षेत्र विधान
निर्वाण क्षेत्र विधान

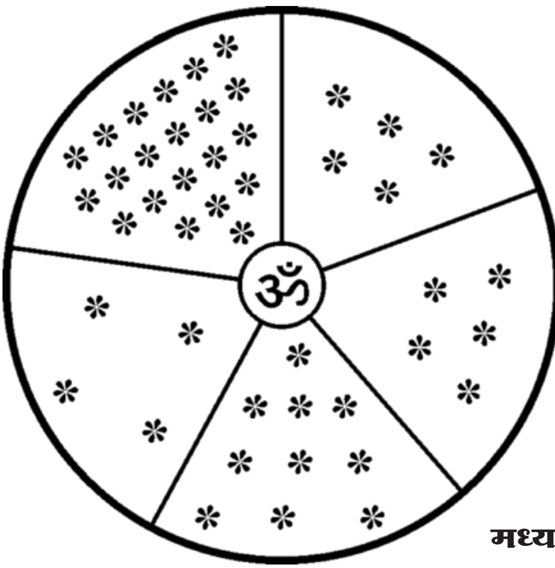

मध्य–ॐ
प्रथम–4
द्वितीय– 21
तृतीय– 5
चतुर्थ–5
पंचम– 10
कुल–46

रचयिता :
प.पू. क्षमामूर्ति 108 आचार्य
विशदसागरजी महामुनिराज

कृति - विशद पंच तीर्थ क्षेत्र विधान

श्री तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र सम्मेद शिखर विधान

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति, पंचकल्याणक प्रभावक
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - प्रथम-2026 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
- मुनि श्री 108 विभोरसागर जी महाराज
- मुनि श्री विलक्ष्य सागर जी महाराज
- मुनि श्री विपिन सागर जी महाराज

सहयोग - आर्यिका भक्ती भारती ,क्षु.वात्सल्य भारती माता जी

संपादन - ब्र. आस्था दीदी 9660996425

संयोजन - ब्र. प्रदीप भैया 7568840873

प्राप्ति स्थल - 1. सुरेश सेठी शांतिनगर जयपुर 9413336017

2. विशद साहित्य केन्द्र
श्री दिगम्बर जैन मंदिर, कुआँ वाला जैनपुरी
3. रेवाड़ी (हरियाणा ● मो.: 09416882301)
4. हरीश जैन विश्वास नगर दिल्ली 9136248971
5. नीरज जैन लखनऊ 9451251308
6. राजेश जैन खाकरोटवाले, अंजनी नगर, इन्दौर मो. 9425316970

मूल्य - 31/- रु. मात्र

-: पुण्यार्जक परिवार : -

पियूष कुमार जैन इन्दौर
राहुल कुमार सिंघई भोपाल

श्री सिद्ध भक्ति

असरीरा जीव घणा, उवजुत्ता दंसणे य णाणे य।
सायार मणायारा-लक्खण-मेयं तु-सिद्धाणं।।1।।
मूलोत्तर पयडीणं बंधोदय, सत्त कम्म उम्मुक्का।
मंगल भूदा सिद्धा-अट्ठ गुणा-तीद संसारा।।2।।
अट्ठ विह कम्म वियला, सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ गुणा किदकिच्चा, लोयग्ग णिवासिणो सिद्धा।।3।।
सिद्धा णट्ठट्ठमला, विसुद्ध बुद्धी य लद्धि सब्भावा।
तिहुगण सिरि सेहरया, पसियंतु भडारया सव्वे।।4।।
गमणा-गमण विमुक्के, विहडिय कम्मपयडि संघारा।
सासय सुह संपत्ते-ते, सिद्धा-वंदिमो णिच्चं।।5।।
जय मंगल भूदाणं, विमलाणं णाण-दंसणमयाणं।
तइलोइ सेहराण, णमो-सव्व-सिद्धाणं।।6।।
सम्मत्त णाण दंसण, वीरिय सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरु-लघु मव्वावाहं-अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं।।7।।
तव सिद्धे णय सिद्धे, संजम सिद्धे चरित्त सिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमस्मामि।।8।।

इच्छामि भंते! सिद्ध भत्ति काउसग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण, सम्मदंसण, सम्मचरित जुत्ताणं, अट्ठविह-कम्म-विप्पमुक्काणं, अट्ठगुण संपण्णाणं, उड्ढलोय मत्थयम्मि पयट्ठियाणं तव सिद्धाणं, णय सिद्धाणं , चरित्त सिद्धाणं, अतीताणागद वट्टमाण कालत्तय सिद्धाण सव्वसिद्धाणं, सया णिच्चकालं, अच्चेमि, पूजेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिण सम्पत्ति होऊ मज्झं।

लघु विनय पाठ

दोहा

पूजा विधि से पूर्व यह ,पढें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव जी, कर्म नशाए आठ।।1।।
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनंत चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान।।2।।
पीडाहारी लोक में,भव-दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के,शिव पद के दातार।।3।।
धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4।।
भविजन को भव सिंधु में, एक आप आधार।
कर्म बंध का जीव के, करने वाले क्षार।।5।।
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।।6।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग।।7।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो!, आया तुमरे द्वार।।8।।

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना ,से हो भव का अंत।।9।।
मंगल जिनगृह बिंब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।10।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

पूजन प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नम:। (पुष्पांजलि क्षेपण करना)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्झामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि-पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलिम् क्षिपेत्)

शुद्धाऽशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाये।।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए ।।

(यदि अवकाश हो तो यहां पर सहस्रनाम पढ़कर दश अर्घ देना चाहिये नहीं तो नीचे लिखा श्लोक पढ़कर एक अर्घ चढ़ावें।)

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण पंच कल्याणेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्र नामेभ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग,करणानुयोग,चरणानुयोग,द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि तत्त्वार्थसूत्र दशाध्याय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

अनेकांत स्याद्वाद के धारी ,अनंत चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन , का करने वाले कल्याण।।
तीनलोक के ज्ञाता दृष्टा ,जग मंगल कारी भगवान।
भावशुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ प्रभु का गुणगान।।1।।
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक ,श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!।
हे अर्हंत! अष्ट द्रव्यों का ,पाया मैंने आलंबन।
होकर के एकाग्र चित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।2।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत्।

स्वस्ति मंगल पाठ

वृषभ अजित संभव अभिनन्दन,सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शान्ती जिन,कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके ,हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान्।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निष्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व-पर कल्याण।।1।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौ भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान्।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मनबल वचन कायबल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।
भेद आठ औषधि ऋद्धी के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।।3।।

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्)(इति पुष्पांजलि क्षिपेत्)

लघु मूलनायक सहित समुच्चय पूजा

स्थापना

दोहा

देव शास्त्र गुरु देव नव, विद्यमान जिन सिद्ध।
कृत्रिमाकृत्रिम बिंब जिन, भू निर्वाण प्रसिद्ध।।
सहस्रनाम दशधर्म शुभ, रत्नत्रय णमोकार।
सोलहकारण का हृदय, आह्वानन् शत् बार।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री..........सहित वर्तमान,भूत,भविष्यत,संबंधी पंच भरत, पंच ऐरावत, विद्यमान विंशति जिन,सर्व देव,शास्त्र,गुरु,नवदेवता,तीस चौबीसी,पंचमेरु, नंदीश्वर,त्रिलोक संबंधी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहृसनाम, सोलहकारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार,तीर्थ क्षेत्र,अतिशय क्षेत्र, ढाई द्वीप स्थित तीन कम नौ करोड गणधरादि मुनि, निर्वाण क्षेत्रादि समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

सखी छंद

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रुज विनशाएँ
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

सुरभित यह गंध चढ़ाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत के पुंज चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पित हम पुष्प चढ़ाएँ, कामादिक दोष नशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चरु यह रसदार चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नों मय दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित यह धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ताजे शिव फलदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, अनुपम अनर्घ्य पद पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-शांती पाने के लिए, देते शांती धार।
हमको भी निज सिम करो, कर दो यह उपकार।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा- पुष्पांजलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।
विशद भावना है यही, कर्म होंय निर्मूल।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा- **जैनधर्म जयवंत है, तीनों लोक त्रिकाल।**
गाते जैनाराध्य की, भाव सहित जयमाल।।

ज्ञानोदय छंद

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैन धर्म जिन चैत्य जिनालय, जैनागम का है अर्चन।।1।।
भरतैरावत ढाई द्वीप में, तीन काल के जिन तीर्थेश।
पंच विदेहों के तीर्थंकर, पूज रहे हम यहाँ विशेष।।2।।
स्वर्ग लोक में और ज्योतिषी, देवों के जो रहे विमान।
भावन व्यंतर के गेहों में, रहे जिनालय महति महान्।।3।।
मध्यलोक में मेरु कुलाचल, गिरि विजयार्ध हैं इष्वाकार।
रजताचल मानुषोत्तर गिरि पे, नंदीश्वर हैं मंगलकार।।4।।
रुचक सुकुंडल गिरि पे जिनगृह, सिद्ध क्षेत्र जो हैं निर्वाण।
सहस्रकूट शुभ समवशरण जिन, मानस्तंभ हैं पूज्य महान्।।5।।
उत्तम क्षमा मार्दव आदिक, बतलाए दश धर्म विशेष।
रत्नत्रय युत धर्म ऋद्धियाँ, सहसनाम पावें तीर्थेश।।6।।

दोहा

सोलह कारण भावना, और अठाई पर्व।
पंच कल्याणक आदि हम, पूज रहे हैं सर्व।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री..........सहित वर्तमान,भूत,भविष्यत,संबंधी पंच भरत, पंच ऐरावत, विद्यमान विंशति जिन,सर्व देव,शास्त्र,गुरु,नवदेवता,तीस चौबीसी,पंचमेरु, नंदीश्वर,त्रिलोक संबंधी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सह्रसनाम, सोलहकारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार,तीर्थक्षेत्र,अतिशय क्षेत्र, ढाई द्वीप स्थित तीन कम नौ करोड गणधरादि जयमाला अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा

जिनाराध्य को पूजकर, पाना शिव सोपान।
यही भावना है विशद, पाएँ पद निर्वाण।।

पुष्पांजलि क्षिपेत्।

स्तवन

दोहा- दोष अठारह से रहित, घाती कर्म विहीन।
शत इन्द्रों से पूज्य हैं, निज स्वभाव में लीन।।

(शम्भू छंद)

प्रथम देव अर्हन्त पूजते, सर्व जगत मंगलकारी।
सिद्ध दशा को पाने वाले, परम सिद्ध हैं शिवकारी।।
अर्हत् कल्पतरू कहलाए, इच्छित फल के दाता हैं।
भवि जीवों को अभय प्रदायक, अनुपम भाग्य विधाता हैं।।1।।
अर्हत् हुए अनन्त भूत में, आगे होते जाएँगे।
अर्हत् केवलज्ञानी आगे, सिद्ध परम पद पाएँगे।।
तीर्थंकर सामान्य केवली, उपसर्ग मूक केवली गाये।
समुद्घात केवलज्ञानी अरु, अन्तःकृत भी कहलाए।।2।।
कर्मोदय से यदि किसी के, रोग भयंकर भारी हो।
तन-मन रहता हो अशांत या, अन्य कोई बीमारी हो।।
विघ्न कोई आ जाते हों या, कोई असाता आ जावे।
भक्ती पूजा करने वाला, निश्चित ही साता पावे।।3।।
पंच तीर्थ शुभ इस विधान का, श्रवण पठन शुभकारी है।
भव-भव के जो लगे कर्म वह, कर्म प्रणासनकारी है।।
सारे जग का वैभव पाकर, इन्द्रादी पदवी पाते।
अचरज क्या जिन की पूजा से, नर भव पा शिवपुर जाते।।4।।
इस विधान की महिमा कोई, शब्दों में ना कह पावे।
अल्पमती नर की क्या शक्ती, बृहस्पति कह के थक जावे।।
पूजा करने से भक्तों के, कर्म शमन हो जाते हैं।
भव्य जीव जिन की अर्चा कर, मोक्ष महाफल पाते हैं।।5।।

दोहा- 'विशद' भाव से भव्य जो, यह विधान इक बार।
करे कराए जिन चरण, पावे शांति अपार।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र पूजा

(स्थापना)

श्री सम्मेद शिखर अष्टापद, चंपापुर जी गिरि गिरनार।
पावापुर का पद्म सरोवर ,है निर्वाण क्षेत्र शुभकार।।
तीर्थंकर के साथ ऋषी कई, प्राप्त किए हैं पद निर्वाण।
पावन तीर्थभूमियों का हम, भाव सहित करते आह्वान।।

दोहा– पंच तीर्थ निर्वाण शुभ, पंचम गति के हेतु।
पूज रहे हम भाव से, पाने को शिव सेतु।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेदशिखर,अष्टापद,चंपापुर,पावापुर,गिरनार आदि सर्व निर्वाण क्षेत्र समूह! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(ज्ञानोदय छंद)

अर्हत् सरोवर का निर्मल जल ,यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
अर्हत् गुणभागी बनने हम, पूजा करने आए हैं।।
तीर्थक्षेत्र हैं अतिशयकारी, तीर्थंकर पाए निर्वाण।
पावन तीर्थों की पूजा कर, हम भी पाएँ शिव सोपान।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेदशिखर,अष्टापद,चंपापुर,पावापुर,गिरनार आदि सर्व निर्वाण क्षेत्रेभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् सरवर से अभिसिंचित, चंदन घिसकर लाए हैं।
भव संताप हटाने को हम, श्री जिन शरण में आए हैं।।
तीर्थक्षेत्र हैं अतिशयकारी, तीर्थंकर पाए निर्वाण।
पावन तीर्थों की पूजाकर, हम भी पाएँ शिव सोपान।।2।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेदशिखर,अष्टापद,चंपापुर,पावापुर,गिरनार आदि सर्व निर्वाण क्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अर्हत् जल से सिंचित, आज यहाँ पर लाए हैं।
अंत नहीं जिसका अक्षय पद ,पाने को हम आए हैं।।

तीर्थक्षेत्र हैं अतिशयकारी, तीर्थंकर पाए निर्वाण।
पावन तीर्थों की पूजाकर, हम भी पाएँ शिव सोपान।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेदशिखर,अष्टापद,चंपापुर,पावापुर,गिरनार आदि सर्व निर्वाण क्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् सागर जल से सिंचित, पुष्प थाल भर लाए हैं।
कामरोग उपशम करने जिन, तरु छाया में आए हैं।।
तीर्थक्षेत्र हैं अतिशयकारी, तीर्थंकर पाए निर्वाण।
पावन तीर्थों की पूजाकर, हम भी पाएँ शिव सोपान।।4।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेदशिखर,अष्टापद,चंपापुर,पावापुर,गिरनार आदि सर्व निर्वाण क्षेत्रेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् सिंधु नीर से विकसित , गोरस का चरु लाए हैं।
खाके नहीं चढ़ा जिन चरणों, क्षुधा नशाने आए हैं।।
तीर्थक्षेत्र हैं अतिशयकारी, तीर्थंकर पाए निर्वाण।
पावन तीर्थों की पूजाकर, हम भी पाएँ शिव सोपान।।5।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेदशिखर,अष्टापद,चंपापुर,पावापुर,गिरनार आदि सर्व निर्वाण क्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् सिंधु विकासित गोरस, घृत का दीप जलाए हैं।
मोह महातम से पीड़ित हम , रोग नशाने आए हैं।।
तीर्थक्षेत्र हैं अतिशयकारी, तीर्थंकर पाए निर्वाण।
पावन तीर्थों की पूजाकर, हम भी पाएँ शिव सोपान।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेदशिखर,अष्टापद,चंपापुर,पावापुर,गिरनार आदि सर्व निर्वाण क्षेत्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिसिंचित तरु अर्हत् जल से, जिसकी धूप बनाए हैं।
कर्मोपद्रव की शांती को,यहाँ जलाने आए हैं।।
तीर्थक्षेत्र हैं अतिशयकारी, तीर्थंकर पाए निर्वाण।
पावन तीर्थों की पूजाकर, हम भी पाएँ शिव सोपान।।7।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेदशिखर,अष्टापद,चंपापुर,पावापुर,गिरनार आदि सर्व निर्वाण क्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् जल से सिंचित् तरु के, सरस पक्व फल लाए हैं।
अजर अमर पद दायक श्री फल, यहाँ चढ़ाने आए हैं।।
तीर्थक्षेत्र हैं अतिशयकारी, तीर्थंकर पाए निर्वाण।
पावन तीर्थों की पूजाकर, हम भी पाएँ शिव सोपान।।8।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेदशिखर,अष्टापद,चंपापुर,पावापुर,गिरनार आदि सर्व निर्वाण क्षेत्रेभ्यो समूहमोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् जल से सिंचित् द्रव्यों, से यह अर्घ्य बनाए हैं।
अर्हत् पद पाके अनर्घ्य पद, पाने जिन पद आए हैं।।
तीर्थक्षेत्र हैं अतिशयकारी, तीर्थंकर पाए निर्वाण।
पावन तीर्थों की पूजाकर, हम भी पाएँ शिव सोपान।।9।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेदशिखर,अष्टापद,चंपापुर,पावापुर,गिरनार आदि सर्व निर्वाण क्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती का दरिया बहे, हर पल जिनके द्वार।
ऐसे जिन तीर्थेश पद, वंदन बारंबार।। शान्तये शांतिधारा

दोहा- पुष्पित जीवन हो विशद, पुष्पांजलि के साथ।।
अतः आपके चरण में, झुका रहे हम माथ।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

सोरठा- तीर्थ क्षेत्र निर्वाण, तीर्थंकर चौबीस के।
पाने शिव सोपान, जयमाला गाते विशद ।।

(चौपाई छंद

श्री सम्मेद शिखर मनहारी, शाश्वत तीर्थ है मंगलकारी।
श्री अजित संभव जिन स्वामी, अभिनंदन जिन अंतर्यामी।।1।।
सुमति पद्म जिनराज कहाए, जिन सुपार्श्व चन्द्रप्रभ गाए।
पुष्पदंत शीतल जिन भाई, श्रेयनाथ जिन मंगलदायी।।2।।

विमलनाथ की महिमा न्यारी, जिनानंत जिनवर अविकारी।
धर्मनाथ धर्म ध्वजधारी, शांति कुंथु अर जिन त्रिपुरारी।।3।।
मल्लिनाथ मुनिसुव्रत गाए, नमि जिन पार्श्वनाथ शिव पाए।
बीस तीर्थंकर शिव पद पाए, अन्य मुनी सह मोक्ष सिधाए।।4।।
तीर्थक्षेत्र अष्टापद जानो, गिरि कैलाश कहाए मानो।
ऋषभदेव शिव पदवी पाए, चक्री भरत भी मोक्ष सिधाए।।5।।
चौदह लाख अन्य मुनि गाए, अष्टापद से मुक्ती पाए।
चंपापुर है अतिशयकारी, श्री मंदार सुगिरि मनहारी।।6।।
वासुपूज तीर्थेश कहाए, जहाँ पंच कल्याणक पाए।
गिरि गिरिनार है तीर्थ निराला, एक हजार सीढ़ियों वाला।।7।।
नेमिनाथ जिनराज कहाए, मोक्ष महापदवी को पाए।
पावापुर से शिव पद पाए, महावीर तीर्थंकर गाए।।8।।

सोरठा- तीर्थंकर जिन पाँच, पंचम गति को पाए हैं।
नाशे भव की आँच, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण यह।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेदशिखर,अष्टापद,चंपापुर,पावापुर,गिरनार आदि सर्व निर्वाण क्षेत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- चौबिस तीर्थंकर प्रभू, पाए पद निर्वाण।
पंच तीर्थ कहलाए वह, करते हम गुणगान।।

।। इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री कैलाश गिरि तीर्थ क्षेत्र पूजा

स्थापना

अनुपम महिमा मयी लोक में, अष्टापद है तीर्थ महान्।
तीर्थंकर श्री ऋषभदेव जी, प्राप्त किए हैं पद निर्वाण।।
चौदह लाख मुनीश्वर एवं, पाए जहाँ से मुक्ती धाम।
हम निर्वाण भूमि जिनवर को, करते बारंबार प्रणाम।।

दोहा- धर्म प्रवर्तक आदि जिन, किए जगत कल्याण।
हृदय कमल में आज हम, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री ऋषभदेव निर्वाणभूमि कैलाश पर्वत सिद्धक्षेत्र:! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री ऋषभदेव निर्वाणभूमि कैलाश पर्वत सिद्धक्षेत्र:! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री ऋषभदेव निर्वाणभूमि कैलाश पर्वत सिद्धक्षेत्र:! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(तर्ज- मुसाफिर क्यों पडा सोता........)

चढ़ा के नीर निर्मल यह, करें जिनराज का अर्चन।
हरें जन्मादि दुख सारे, कटें अज्ञान के बंधन।।
तीर्थ कैलाश गिरि की हम ,यहाँ पूजा रचाते हैं।
मिले निर्वाण हमको भी, भावना आज भाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री ऋषभदेव निर्वाणभूमि कैलाश पर्वत सिद्धक्षेत्राय नमः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाएँ ज्ञान चंदन जो, परम शीतल है मनहारी।
ताप संसार का नाशी, जगत जन का है उपकारी।।
तीर्थ कैलाश गिरि की हम, यहाँ पूजा रचाते हैं।
मिले निर्वाण हमको भी, भावना आज भाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री ऋषभदेव निर्वाणभूमि कैलाश पर्वत सिद्धक्षेत्राय नमः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान अक्षत अतीन्द्रिय जो, चढ़ाएँ तव चरण स्वामी।
स्व पद अक्षय मिले हमको, जिनेश्वर मुक्ति पथ गामी।।
तीर्थ कैलाश गिरि की हम ,यहाँ पूजा रचाते हैं।
मिले निर्वाण हमको भी, भावना आज भाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री ऋषभदेव निर्वाणभूमि कैलाश पर्वत सिद्धक्षेत्राय नमः अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

शील की संपदा पाएँ, परम गुण श्रेष्ठ प्रगटाएँ।
काम रुज शीघ्र विनशाएँ, अकामी मुक्ति पद पाएँ।।
तीर्थ कैलाश गिरि की हम ,यहाँ पूजा रचाते हैं।
मिले निर्वाण हमको भी, भावना आज भाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री ऋषभदेव निर्वाणभूमि कैलाश पर्वत सिद्धक्षेत्राय नमः कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सुचरु निर्मित किए स्वामी, सरस लेकर यहाँ आए।
सुपद पाने अनाहारी, भावना वश यही लाए।।
तीर्थ कैलाश गिरि की हम ,यहाँ पूजा रचाते हैं।
मिले निर्वाण हमको भी, भावना आज भाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री ऋषभदेव निर्वाणभूमि कैलाश पर्वत सिद्धक्षेत्राय नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वात्म वैभव के दीपक की, ज्योति जगमग जगे स्वामी।
मोहतम को नशाकर के, बनें हम मोक्ष पथ गामी।।
तीर्थ कैलाश गिरि की हम, यहाँ पूजा रचाते हैं।
मिले निर्वाण हमको भी, भावना आज भाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री ऋषभदेव निर्वाणभूमि कैलाश पर्वत सिद्धक्षेत्राय नमः मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप ले आत्म चिंतन की, शुक्लध्यानी बनें स्वामी।
कर्म आठों नशाएँ हम, बनें हम सिद्ध पद गामी।।
तीर्थ कैलाश गिरि की हम ,यहाँ पूजा रचाते हैं।
मिले निर्वाण हमको भी, भावना आज भाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री ऋषभदेव निर्वाणभूमि कैलाश पर्वत सिद्धक्षेत्राय नमः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान तरु के सुफल पाएँ, बनें मुक्ती के अनुगामी।
मोक्ष फल प्राप्त हो हमको, बनें हम मोक्ष के स्वामी।।
तीर्थ कैलाश गिरि की हम ,यहाँ पूजा रचाते हैं।
मिले निर्वाण हमको भी, भावना आज भाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री ऋषभदेव निर्वाणभूमि कैलाश पर्वत सिद्धक्षेत्राय नमः मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य निज भाव के लेकर, आत्म वैभव को प्रगटाएँ।
विशद है मोक्ष का मारग, उसी पर हम सदा जाएँ।।
तीर्थ कैलाश गिरि की हम ,यहाँ पूजा रचाते हैं।
मिले निर्वाण हमको भी, भावना आज भाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री ऋषभदेव निर्वाणभूमि कैलाश पर्वत सिद्धक्षेत्राय नमः अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांती की है चाह तो, देवें शांती धार।
कर्म नाशकर के विशद, होंगे भव से पार।। *(शांतये शांतिधारा)*

दोहा– महके पुष्पाञ्जलि किए, जीवन पुष्प समान।
करें अतः शुभ भाव से, श्री जिनका गुणगान।। *(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)*

पंच कल्याणक के अर्घ्य (मोतियादाम छंद)

आषाढ़ वदि द्वितीया रही महान्, प्रभु जी पाए गर्भ कल्याण।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़वदि द्वितीयायां गर्भकल्याण प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत वदि नौमी को भगवान, प्राप्त शुभ किए जन्म कल्याण।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्र वदि नवम्यां जन्मकल्याण प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत वदि नौमी को शुभकार, प्रभु ने संयम लीन्हा धार।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्र वदि नवम्यां तपकल्याण प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदी फाल्गुन एकादशि जान, प्रभू जी पाए केवलज्ञान।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन वदि एकादश्यां केवलज्ञान कल्याण प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ वदि चौदश हुई महान्,कैलाशगिरि से पाए निर्वाण।।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।5।।

ॐ ह्रीं माघ कृष्ण चतुर्दश्यां तीर्थंकर श्री ऋषभदेव निर्वाण कल्याणक पवित्र कैलाश पर्वत सिद्धक्षेत्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घावली

दोहा– आदिनाथ जिनराज की, महिमा अगम अपार।
पुष्पाञ्जलि करते चरण, पाने भवदधि पार।।

इति मण्डस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(त्रिकाल चौबीसी के अर्घ्य)

श्री निर्वाण आदि तीर्थंकर, भूतकाल के हैं चौबीस।
भरत क्षेत्र के आर्य खंड में, तीर्थ प्रवर्तन किए ऋशीष।।
तीर्थंकर के जिन बिंबों का, रत्नमयी करके निर्माण।
वीतरागमय जिनबिंबों का, भव्य जीव करते गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं कैलाश पर्वतस्योपरि विराजित भूत कालीन श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराणां जिन प्रतिमा चरणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्तमान तीर्थंकर अनुपम, परम पूज्यता पाए प्रधान।
ऋषभ देव से महावीर तक, तीर्थंकर चौबीस महान्।।
जिनकी रत्नमयी प्रतिमाओं ,का भरतेश किए निर्माण।
वीतरागमय जिनबिंबों का, भव्य जीव करते गुणगान।।2।।

ॐ ह्रीं कैलाश पर्वतस्योपरि विराजित वर्तमान कालीन श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराणां जिन प्रतिमा चरणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महापद्म तीर्थंकर आदिक, अनंत वीर्य पावन तीर्थेश ।
जो भविष्य में होने वाले, चौबिस जिनवर कहे विशेष।।
जिनकी रत्नमयी प्रतिमाओं ,का भरतेश किए निर्माण।
वीतरागमय जिनबिंबों का, भव्य जीव करते गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं कैलाश पर्वतोपरि विराजित भविष्यत कालीन श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराणां जिन प्रतिमा चरणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भरत चक्रवर्ति किए, जिनगृह का निर्माण।
त्रैकालिक तीर्थेश जो, पधराए भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं कैलाश पर्वतस्योपरि विराजित त्रैकालिक ,चतुर्विंशति तीर्थंकराणां जिन प्रतिमाचरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानोदय छंद

श्री ऋषभदेव जी तीर्थंकर, अष्टापद गिरि पे जाकर के।
चौदह दिन योग निरोध किए, निज आतम ध्यान लगाकर के।।
प्रभु माघ कृष्ण की चतुर्दशी, को कर्म घातिया नाश किए।
हम अर्घ्य चढ़ाते तीर्थ भूमि, जिन चरणों में विश्वास लिए।।5।।

ॐ ह्रीं माघ कृष्ण चतुर्दश्यां कैलाश पर्वतस्योपरि निर्वाण पद प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **तीर्थ क्षेत्र कैलाश गिरि, अनुपम रहा विशाल।**
भाव सहित जिसकी यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(तर्ज– वंदे जिनवरम्........)

पूजन कर लो मिलकर के सब, गिरि कैलाश महान् की।
धर्म प्रवर्तक ऋषभ देव के, प्रथम मोक्ष स्थान की।।
वंदे गिरिवरम्–वंदे जिनवरम्।।टेक।।

तृतिय काल के अंत में स्वामी, ऋषभदेव जी शिव पाए।
चक्रवर्ति भरतेश वहाँ पर, रत्न जिनालय बनवाए।।
जय–जयकार किए सुर नर सब, पावन तीरथ धाम की।
धर्म प्रवर्तक ऋषभ देव के, प्रथम मोक्ष स्थान की।।
वंदे गिरिवरम्–वंदे जिनवरम्।।1।।

भरतादिक दश सहस मुनीश्वर, और वहाँ से मोक्ष गये।
निज आतम का ध्यान लगाकर, अपने सारे कर्म क्षये।।
महिमा छाई सारे जग में, जिनवर कृपा निधान की।
धर्म प्रवर्तक ऋषभ देव के, प्रथम मोक्ष स्थान की।।
वंदे गिरिवरम्–वंदे जिनवरम्।।2।।

कण–कण पावन है भूधर का, सुर नर मुनि से पूज्य रहा।
मुक्ती पाना भवि जीवों का, अपना अनुपम लक्ष्य रहा।।
महिमा गाई है संतों ने, प्रभु के केवल ज्ञान की।
धर्म प्रवर्तक ऋषभ देव के, प्रथम मोक्ष स्थान की।।
वंदे गिरिवरम्–वंदे जिनवरम्।।3।।

कर्म घातिया क्षयकर जो भी, केवलज्ञान जगाते हैं।
सर्व कर्म का क्षयकर के वे, मोक्ष सुयश को पाते हैं।।
लगन लगी है मेरे मन में, अनुपम पद निर्वाण की।
धर्म प्रवर्तक ऋषभ देव के, प्रथम मोक्ष स्थान की।।
वंदे गिरिवरम्-वंदे जिनवरम्।।4।।

दोहा- नर जीवन का सार है, पावन पद निर्वाण।
पूज रहे हम भाव से, करते हैं गुणगान।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री ऋषभदेव निर्वाणभूमि कैलाश पर्वत सिद्धक्षेत्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- महिमा तीरथ राज की, गाई अपरंपार।
भाव सहित वंदन 'विशद', करते बारंबार।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री सम्मेद शिखर तीर्थ क्षेत्र पूजा

स्थापना

है सिद्ध क्षेत्र शाश्वत पावन, सम्मेद शिखर जो कहलाए।
तीर्थेश भूत में सिद्ध हुए, इस काल में भी शिव पद पाए।।
श्री अजितनाथ जी आदि बीस, तीर्थंकर पाए हैं निर्वाण।
मुनिगण असंख्य मुक्ती पाए, हम भाव सहित करते आह्वान।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर शाश्वत सिद्धक्षेत्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर शाश्वत सिद्धक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर शाश्वत सिद्धक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौपाई आँचलीबद्ध)

भाव से निर्मल नीर चढ़ाय, वह जन्मादिक रोग नशाय।
महासुखदाय-महासुखदाय, भवि जीवों को मोक्ष प्रदाय।।
श्री सम्मेद शिखर पे जाय, कर्म नाशकर मुक्ती पाय।
महासुखदाय-महासुखदाय, भवि जीवों को मोक्ष प्रदाय।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर शाश्वत सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

केशर चंदन में घिसवाय, भवाताप को चरण चढ़ाय।।
महासुखदाय–महासुखदाय, भवि जीवों को मोक्ष प्रदाय।।
श्री सम्मेद शिखर पे जाय, कर्म नाशकर मुक्ती पाय।
महासुखदाय–महासुखदाय, भवि जीवों को मोक्ष प्रदाय।।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर शाश्वत सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

जल से अक्षत श्वेत धुवाय, चढ़ाके अक्षय पदवी पाय।
महासुखदाय–महासुखदाय, भवि जीवों को मोक्ष प्रदाय।।
श्री सम्मेद शिखर पे जाय, कर्म नाशकर मुक्ती पाय।
महासुखदाय–महासुखदाय, भवि जीवों को मोक्ष प्रदाय।।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर शाश्वत सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

पुष्प थाल भर पूर्ण चढ़ाय, काम रोग को वह विनशाय।
महासुखदाय–महासुखदाय, भवि जीवों को मोक्ष प्रदाय।।
श्री सम्मेद शिखर पे जाय, कर्म नाशकर मुक्ती पाय।
महासुखदाय–महासुखदाय, भवि जीवों को मोक्ष प्रदाय।।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर शाश्वत सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

घृत का पावन सुचरु बनाय, चढ़ाके क्षुधा रोग विनशाय।
महासुखदाय–महासुखदाय, भवि जीवों को मोक्ष प्रदाय।।
श्री सम्मेद शिखर पे जाय, कर्म नाशकर मुक्ती पाय।
महासुखदाय–महासुखदाय, भवि जीवों को मोक्ष प्रदाय।।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर शाश्वत सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

रत्नमयी शुभ दीप जलाय, मोह महातम पूर्ण नशाय।
महासुखदाय–महासुखदाय, भवि जीवों को मोक्ष प्रदाय।।
श्री सम्मेद शिखर पे जाय, कर्म नाशकर मुक्ती पाय।
महासुखदाय–महासुखदाय, भवि जीवों को मोक्ष प्रदाय।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर शाश्वत सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।

अग्नी में शुभ धूप जलाय, अष्ट कर्म अपने विनशाय।
महासुखदाय–महासुखदाय, भवि जीवों को मोक्ष प्रदाय।।

श्री सम्मेद शिखर पे जाय, कर्म नाशकर मुक्ती पाय।
महासुखदाय–महासुखदाय, भवि जीवों को मोक्ष प्रदाय।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर शाश्वत सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

सरस फलों से थाल भराय ,जिन पद चढ़ा मोक्ष पद पाय।
महासुखदाय–महासुखदाय, भवि जीवों को मोक्ष प्रदाय।।
श्री सम्मेद शिखर पे जाय, कर्म नाशकर मुक्ती पाय।
महासुखदाय–महासुखदाय, भवि जीवों को मोक्ष प्रदाय।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर शाश्वत सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाय, विशद अनर्घ्य सुपद प्रगटाय।
महासुखदाय–महासुखदाय, भवि जीवों को मोक्ष प्रदाय।।
श्री सम्मेद शिखर पे जाय, कर्म नाशकर मुक्ती पाय।
महासुखदाय–महासुखदाय, भवि जीवों को मोक्ष प्रदाय।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर शाश्वत सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– जिनवर तीनों लोक में, महिमामयी महान् ।
शांतीधारा दे रहे, पाने शिव सोपान।। *(शांतये शांतिधारा)*

दोहा– श्री अर्हद् पद पूजते, पुष्पांजलि के साथ।
शिव पद हमको भी मिले, झुका रहे पद माथ *(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)*

अर्घावली

दोहा– शाश्वत तीरथ राज है, श्री सम्मेद महान् ।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने शिव सोपान ।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

सिद्धवर कूट (दोहा)

मुक्ति सिद्धवर कूट से, पाए अजित जिनेश।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, श्री जिन चरण विशेष।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्रादि 1अरब 80 करोड़ 54 लाख मुनि सिद्धवर कूट से मुक्त हुए तिनके चरणारविंद में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल कूट

धवल कूट से शिव गये, जिनवर संभवनाथ।
अर्चा करते जिन चरण, ऊपर करके हाथ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्रादि 9 कोड़ाकोड़ी 12 लाख 42 हजार 500 मुनि धवल कूट से मुक्त हुए तिनके चरणारविंद में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनंद कूट

अभिनंदन जिनराज का, कूट रहा आनंद।
जिनकी अर्चा कर विशद, आस्रव होवे मंद।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्रादि 72 कोड़ाकोड़ी 70 करोड़ 70 लाख 42 हजार 700 मुनि आनंद कूट से मुक्त हुए तिनके चरणारविंद में अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अविचल कूट

सुमतिनाथ जी शिव गये, अविचल कूट है नाम।
जिन के चरणों में विशद, बारंबार प्रणाम।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्रादि 1 कोड़ाकोड़ी 84 करोड़ 72 लाख 81 हजार 700 मुनि अविचल कूट से मुक्त हुए तिनके चरणारविंद में जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मोहन कूट

पद्म प्रभु भगवान का, मोहन कूट विशेष।
अर्चा करते भाव से, पाने निज स्वदेश।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्रादि 99 कोड़ाकोड़ी 87 लाख 43 हजार 790 मुनि मोहन कूट से मुक्त हुए तिनके चरणारविंद में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभास कूट

श्री सुपार्श्व जिन शिव गये, कूट प्रभास सुनाम।
मुक्त हुए जो अन्य ऋषि, तिन पद विशद प्रणाम ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि 49 कोड़ाकोड़ी 84 करोड़ 72 लाख 7 हजार 742 मुनि प्रभास कूट से मुक्त हुए तिनके चरणारविंद में जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

ललित कूट

ललित कूट से शिव गये, चन्द्र प्रभु तीर्थेश।
अर्चा करते जिन चरण, देकर अर्घ्य विशेष।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रादि 984 अरब 72 करोड़ 80 लाख 84 हजार 755 मुनि ललित कूट से मुक्त हुए तिनके चरणारविंद में जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुप्रभ कूट

पुष्पदंत भगवान का, सुप्रभ कूट विशेष।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, पाने निज स्वदेश।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्रादि 1 कोड़ाकोड़ी 99 लाख 7 हजार 480 मुनि सुप्रभ कूट से मुक्त हुए तिनके चरणारविंद में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युतवर कूट

शीतलनाथ जिनेन्द्र का, विद्युतवर है कूट।
अर्चा करते जिन चरण, श्रद्धा धार अटूट।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्रादि 18कोड़ाकोड़ी 42करोड़ 32लाख 42 हजार 905 मुनि विद्युतवर कूट से मुक्त हुए तिनके चरणारविंद में जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

संकुल कूट

पाए संकुल कूट से, जिन श्रेयांस शिवधाम।
अर्घ्य चढ़ा जिनके चरण, करते विशद प्रणाम।।10।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्रादि 96 कोड़ाकोड़ी 96 करोड़ 96 लाख 9 हजार 542 मुनि संकुल कूट से मुक्त हुए तिनके चरणारविंद में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुवीर कूट

मुक्ती पाए विमल जिन, कूट कहाए सुवीर।
जिनकी अर्चा हम करें, पाने भव का तीर।।11।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्रादि 70 कोड़ाकोड़ी 84 करोड़ 72 लाख 7 हजार 754मुनि सुवीर कूट से मुक्त हुए तिनके चरणारविंद में जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

स्वयंभू कूट

कूट स्वयंभू से हुए, जिनानंत शिवकार।
अर्घ्य चढ़ा जिनके चरण, वंदू बारंबार।।12।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्रादि 96 कोड़ाकोड़ी 70 करोड़ 70 लाख 70 हजार 700 मुनि स्वयंभू कूट से मुक्त हुए तिनके चरणारविंद में जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुदत्त कूट

मोक्ष गये श्री धर्म जिन, कूट सुदत्त महान्।
जिनकी अर्चा कर मिले, भव्यों को निर्वाण।।13।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथ जिनेन्द्रादि 70 कोड़ाकोड़ी 84 करोड़ 72 लाख 7 हजार 754 मुनि सुदत्त कूट से मुक्त हुए तिनके चरणारविंद में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंदप्रभ कूट

कूट कुंदप्रभ शांति जिन, का है जगत प्रसिद्ध।
ऋषियों के पद पूजते, हुए अभी तक सिद्ध।।14।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथ जिनेन्द्रादि 9 कोड़ाकोड़ी 9 लाख 9 हजार 999 मुनि कुंदप्रभ कूट से मुक्त हुए तिनके चरणारविंद में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानधर कूट

कूट ज्ञानधर से गये, कुंथुनाथ शिव लोक।
अर्घ्य चढ़ा जिनके चरण, देते हैं हम ढोक।।15।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथ जिनेन्द्रादि 96 कोड़ाकोड़ी 96 करोड़32 लाख 96 हजार 742 मुनि ज्ञानधर कूट से मुक्त हुए तिनके चरणारविंद में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाटक कूट

अरहनाथ जिनराज का, गाया नाटक कूट।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, जाएँ कर्म से जाए छूट।।16।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्रादि 99 करोड़ 72 लाख 99 हजार 999 मुनि नाटक कूट से मुक्त हुए तिनके चरणारविंद में जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

संबल कूट

शिवपद पाए मल्लि जिन, संबल कूट महान्।

अर्घ्य चढ़ा जिनके चरण, करते विशद प्रणाम।।17।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्रादि 96 करोड़ मुनि संबल कूट से मुक्त हुए तिनके चरणारविंद में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्जर कूट

निर्जर कूट से पाए शिव, मुनिसुव्रत भगवान।

जिन अर्चा कर जीव कई, किए आत्म कल्याण।।18।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्रादि 99 कोड़ाकोड़ी 99 करोड़ 99 लाख 999 मुनि निर्जर कूट से मुक्त हुए तिनके चरणारविंद में जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मित्रधर कूट

पाए मित्रधर कूट से, नमि जिनवर शिवराज।

अर्घ्य चढ़ा जिनके चरण, वंदन करते आज।।19।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्रादि 9 कोडाकोडी 1 अरब 45 लाख 7 हजार 942 मुनि मित्रधर कूट से मुक्त हुए तिनके चरणारविंद में जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

स्वर्णभद्र कूट

स्वर्णभद्र शुभ कूट से, पाए जो शिव धाम।

पार्श्वनाथ जिन के चरण, बारंबार प्रणाम।।20।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि 82 करोड़ 84 लाख अरब 45 हजार 742 मुनि स्वर्णभद्र कूट से मुक्त हुए तिनके चरणारविंद में जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

गणधर कूट

तीर्थंकर चौबीस के, चौबिस गणी प्रधान।

अर्घ्य चढ़ा वंदन करें, पाने शिव सोपान।।21।।

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरादि विभिन्न स्थानों से मोक्ष पधारे उन पवित्र स्थानों को तिनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- शाश्वत तीरथराज है, गिरि सम्मेद महान्।
अर्चा करते भाव से, पाने पद निर्वाण।।

छंद-तामरस

जय जय तीरथ राज नमस्ते, तारण तरण जहाज नमस्ते।
गणधर पद चौबीस नमस्ते, सिद्ध अनंत ऋशीष नमस्ते।।1।।
प्रथम ज्ञानधर कूट नमस्ते, कूट मित्रधर पूज्य नमस्ते।
नाटक कूट प्रधान नमस्ते , संबल कूट महान् नमस्ते।।2।।
संकुल कूट विशेष नमस्ते, सुप्रभ कूट जिनेश नमस्ते।
मोहन कूट पे जाय नमस्ते, निर्जर कूट जिनाय नमस्ते।।3।।
ललित कूट है दूर नमस्ते, अष्टापद भरपूर नमस्ते।
विद्युत वर मनहार नमस्ते, कूट स्वयंभू सार नमस्ते।।4।।
धवल कूट है श्वेत नमस्ते, चंपापुर जी क्षेत्र नमस्ते।
आनंद कूट गिरीश नमस्ते, चंपापुर जी क्षेत्र नमस्ते।।5।।
अविचल कूट मुनीश नमस्ते, कूट कुंदप्रभ शीश नमस्ते।
पावापुर जी क्षेत्र नमस्ते, कूट प्रभास विशेष नमस्ते।।6।।
पावन कूट सुवीर नमस्ते, कूट सिद्धवर तीर नमस्ते।
गिरि गिरिनार अटूट नमस्ते, स्वर्णभद्र शुभ कूट नमस्ते।।7।।

दोहा- महिमा तीर्थ सम्मेद गिरि, की है अपरंपार।
विशद भाव से पूजते, नत हो बारंबार।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर शाश्वत सिद्धक्षेत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- तीर्थराज की वंदना, करके प्रभु गुणगान।
मोक्ष मार्ग पर जो बढ़ें, पावें शिव सोपान।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चंपापुर तीर्थ क्षेत्र पूजा

स्थापना

वसूपूज्य नृप जयावती हैं, चंपापुर नगरी के ईश।
वासुपूज्य जिनके गृह जन्मे, तीर्थंकर जिन हुए महीष।।
बाल ब्रह्मचारी तीर्थंकर, होकर किए जगत कल्याण।
पंच कल्याणक चंपापुर में, पाए हम करते आह्वान।।

दोहा- आओ पधारो मम् हृदय, करो मेरा कल्याण।
अर्चा करते भाव से, पाने पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं श्री चंपापुर तीर्थ स्थित वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(जोगीरासा छंद)

जन्मादिक त्रय रोग निवारक ,नीर है यह शुभकारी।
चंपापुर के वासुपूज्य पद, अतिशय ढोक हमारी।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पंचकल्याणक स्थल चंपापुर तीर्थक्षेत्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

भव-भव का संताप निवारी, चंदन है शुभकारी।
चंपापुर के वासुपूज्य पद, अतिशय ढोक हमारी।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पंचकल्याणक स्थल चंपापुर तीर्थक्षेत्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत अक्षय सुपद प्रदायक, श्वेत हैं मंगलकारी।
चंपापुर के वासुपूज्य पद, अतिशय ढोक हमारी।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पंचकल्याणक स्थल चंपापुर तीर्थक्षेत्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

कामरूप रुज के परिहारी, पुष्प हैं खुशबूकारी।
चंपापुर के वासुपूज्य पद, अतिशय ढोक हमारी।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पंचकल्याणक स्थल चंपापुर तीर्थक्षेत्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

क्षुधा रोग के नाशी अनुपम, सरस सुचरु मनहारी।
चंपापुर के वासुपूज्य पद, अतिशय ढोक हमारी।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पंचकल्याणक स्थल चंपापुर तीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मोह तिमिर के नाशी दीपक, अनुपम हैं मनहारी।
चंपापुर के वासुपूज्य पद, अतिशय ढोक हमारी।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पंचकल्याणक स्थल चंपापुर तीर्थक्षेत्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप कर्म की नाशी पावन, खेते हम शुभकारी।
चंपापुर के वासुपूज्य पद, अतिशय ढोक हमारी।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पंचकल्याणक स्थल चंपापुर तीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल यह मोक्ष महाफलदायी ,रहे सरस शिवकारी।
चंपापुर के वासुपूज्य पद, अतिशय ढोक हमारी।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पंचकल्याणक स्थल चंपापुर तीर्थक्षेत्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व.स्वाहा।

अर्घ्य अनर्घ्य प्रदायक पावन, पूजें शिवमग चारी।
चंपापुर के वासुपूज्य पद, अतिशय ढोक हमारी।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पंचकल्याणक स्थल चंपापुर तीर्थक्षेत्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– भक्ती कर जिनराज की, प्रकट होय निज धर्म।
शांतीधारा दे रहे, हों विनाश सब कर्म।। *(शांतये शांतिधारा)*

दोहा– भक्ति भावना से जगे, अनुपम पुण्य प्रकाश।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, हो शिवपुर में वास।।*(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)*

पंच कल्याणक के अर्घ्य (सोरठा)

हो गई मालामाल, षष्ठी कृष्ण अषाढ़ की।
दीन दयाल कृपाल, गर्भ कल्याणक पाए तब।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण षष्ठी गर्भमंगल मंडिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जन्मे जिन भगवान, फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी।
इन्द्र किए गुणगान, आनंदोत्सव तब किए।।2।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां जन्ममंगल मंडिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पकड़ी शिव की राह, फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी।
छोड़ी जग की चाह, संयम धारा आपने।।3।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां तपमंगल मंडिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म घातिया नाश, शिव पद के राही बने।
कीन्हें ज्ञान प्रकाश, भादों शुक्ला दोज को।।4।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल द्वितीयायां ज्ञानमंगल मंडिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आठों कर्म विनाश, वासुपूज्य प्रभु ने किए।
सिद्ध शिला पर वास, सुदी चतुर्दशी भाद्रपद।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल चतुर्दश्यां मोक्षमंगल मंडिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अर्घ्यावली

चंपापुर में गर्भ जन्म प्रभु, पाए वासुपूज्य भगवान।
धन्य धरा हो गई वहाँ की, पाए हैं प्रभु जी कल्याण।।
लाल रंग में वासुपूज्य प्रभु, शोभा पाते अपरंपार।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, वंदन करते बारंबार।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भ, जन्म कल्याणक प्राप्त चंपापुर क्षेत्र स्थित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीर्थ क्षेत्र मंदार सुगिरि से, प्रभु तप ज्ञान मोक्ष कल्याण।
प्राप्त किए श्री वासुपूज्य जी, क्षेत्र कहाए जो निर्वाण।।
मूल वेदि में प्रभू विराजित, गंधकुटी है मंगलकार।
श्री जिन तीर्थ क्षेत्र को, वंदन करते हैं हम बारंबार।।2।।

ॐ ह्रीं मंदागिरि क्षेत्रे तप, ज्ञान, मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व स्वाहा।

दोहा- महिमा श्री जिनराज की, गाई अगम अपार।
वंदन करते भाव से, पाने को भव पार।।

ॐ ह्रीं गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा- चंपापुर मंदारगिरि, में द्वय त्रय कल्याण।
पाए हैं वासुपूज्य जी, करते हम गुणगान।।

तर्ज- आओ बच्चो तुम्हें..........

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, तीर्थ वंदना को लाए।
चंपापुर मंदार सुगिरि की, अर्चा करने हम आए।।
चंपापुर को नमन, मंदारगिरि को नमन-2।।टेक।।
बड़े पुण्य से तीर्थंकर प्रभु ,नर पर्याय को पाते हैं।।
सोलह कारण भव्य भावना, विशद भाव से भाते हैं।
जिसके फल से वासुपूज्य प्रभु, तीर्थंकर पद प्रगटाए।।
चंपापुर मंदार सुगिरि की......।।1।।
जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र में, आर्य खंड मनहारी है।
भारत देश बिहार प्रांत में, चंपापुर शुभकारी है।।
पंचकल्याणक इसी भूमि से, वासुपूज्य प्रभु जी पाए।
चंपापुर मंदार सुगिरि की.......।।2।।
जयावती नृप वसुपूज्य के, गृह में पावन कमल खिला।
विश्व हितंकर जग कल्याणी, जग जन को आधार मिला।।
जिनकी गौरव गरिमा गाने, इन्द्र स्वर्ग से सौ आए।
चंपापुर मंदार सुगिरि की.........।।3।।
ऐरावत पर इन्द्र स्वर्ग से, भक्ती करने आता है।
जन्मोत्सव पर मेरु सुगिरि पे, प्रभु का न्हवन करता है।।
सौ इन्द्रों ने मिलकर प्रभु के, जय-जयकारे लगवाए।
चंपापुर मंदार सुगिरि की........।।4।।
संयम तप से कर्म निर्जरा, करके ज्ञान जगाते हैं।
अष्ट कर्म का नाश किए फिर, मोक्ष महाफल पाते हैं।।
मुक्ती पाए जिस भू से प्रभु, निर्वाण क्षेत्र कहा जाए।
चंपापुर मंदार सुगिरि की........।।5।।

दोहा– तीर्थंकर प्रभु पूज्य हैं, तीर्थक्षेत्र निर्वाण।
वासुपूज्य भगवान का, किया विशद गुणगान।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पंचकल्याणक चंपापुर मंदारगिरि तीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– पूज्य हैं तीनों लोक में, जिन कल्याणक धाम।
भ्रमण मैट भव सिंधु का, हो निज में विश्राम।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री गिरिनार तीर्थक्षेत्र पूजा

स्थापना

है गिरिनार तीर्थ मंगलमय, ऊर्जयंत है जिसका नाम।
नेमिनाथ वैरागी होकर, पाए जहाँ से हैं शिव धाम।।
नारायण श्री कृष्ण के भ्राता, अन्य कई पाए निर्वाण।
ऐसे पावन तीर्थक्षेत्र का, करते भाव सहित आह्वान।।
दोहा– महिमा गाते आपकी, होके भाव विभोर।
हरी भरी खुशहाल हो, धरती चारों ओर।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री नेमिनाथ निर्वाणभूमि गिरिनारगिरि सिद्धक्षेत्र! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

तर्ज– करम के खेल कैसे हैं, सुनो तुमको सुनाते हैं।
प्रथम कर्तव्य श्रावक का, अतः पूजा रचाते हैं।।टेक।।
हैं प्यासे जन्म जन्मों से, प्यास ना शांत हो पाई।
रोग जन्मादि हरने को, नीर प्रासुक चढ़ाते हैं।।
करम के खेल........।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री नेमिनाथ निर्वाणभूमि गिरिनारगिरि सिद्धक्षेत्राय जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अनादि भव भ्रमण हमने, किया अज्ञान के कारण।
भवातप नाश हो जाए, यहाँ चंदन चढ़ाते हैं।।
करम के खेल........।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री नेमिनाथ निर्वाणभूमि गिरिनारगिरि सिद्धक्षेत्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

हुए हम क्षत विक्षत हरदम, मोह मिथ्यात्व ने घेरा।
प्राप्त करने सुपद अक्षय, धवल अक्षत चढ़ाते हैं।।
करम के खेल........।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री नेमिनाथ निर्वाणभूमि गिरिनारगिरि सिद्धक्षेत्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम रुज से सताए हम, भ्रमर से हम भ्रमे जग में।
काम रुज नाश करने को, पुष्प सुरभित चढ़ाते हैं।।
करम के खेल........।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री नेमिनाथ निर्वाणभूमि गिरिनारगिरि सिद्धक्षेत्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सताती है क्षुधा डायन, कभी न तृप्त होते हैं।
क्षुधा रुज नाश करने को, सुचरु सुरभित चढ़ाते हैं।।
करम के खेल........।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री नेमिनाथ निर्वाणभूमि गिरिनारगिरि सिद्धक्षेत्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनादी से महामद पी, हुए मदमत्त अज्ञानी।
जलाकर दीप यह घृत का, यहाँ अतिशय चढ़ाते हैं।।
करम के खेल........।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री नेमिनाथ निर्वाणभूमि गिरिनारगिरि सिद्धक्षेत्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म आठों मेरे आठों, अंग में घेरा डाले हैं।
जलाने कर्म वे सारे, धूप सुरभित जलाते हैं।।
करम के खेल........।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री नेमिनाथ निर्वाणभूमि गिरिनारगिरि सिद्धक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

किए हैं कार्य कितने ही, हुए असफल पूर्ण वे सब।
सुफल अब मोक्ष फल पाने, सरस फल यह चढ़ाते हैं।।
करम के खेल........।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री नेमिनाथ निर्वाणभूमि गिरिनारगिरि सिद्धक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

भ्रमण भव की कहानी को, कहें शब्दों में हम कैसे।
सुपद शाश्वत विशद पाने, अर्घ्य अनुपम चढ़ाते हैं।।
करम के खेल........।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री नेमिनाथ निर्वाणभूमि गिरिनारगिरि सिद्धक्षेत्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- ऋद्धि सिद्धियों से सभी, पाते हैं सुख भोग।
जलधारा देते यहाँ, पाने शिव पद योग।। *(शांतये शांतिधारा)*

दोहा- भक्ती का फल मुक्ति है, कहते जिन भगवान।
पुष्पांजलि करते यहाँ, करके जिन गुणगान।। *(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)*

पंच कल्याणक के अर्घ्य (चाल छंद)

भूलोक पूर्ण हर्षाया, गर्भागम प्रभु ने पाया।
कार्तिक सुदि षष्ठी पाए, प्रभु स्वर्ग से चयकर आए।।1।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाषष्ठम्यां गर्भमंगल मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी स्वामी, जन्मे जिन अंतर्यामी।
भू पे छाई उजियाली, पा दिव्य दिवाकर लाली।।2।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी गाई, नेमी जिन दीक्षा पाई।
पशुओं का बंधन तोड़ा, इस जग से मुख को मोड़ा।।3।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां तपमंगल मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अश्विन सुदि एकम् जानो, प्रभु ज्ञान जगाए मानो।
शिव पथ की राह दिखाए, जीवों को अभय दिलाए।।4।।

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्लाप्रतिपदायां केवलज्ञानमंगल मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सातें अषाढ़ सुदि गाई, भव से प्रभु मुक्ती पाई।
नश्वर शरीर यह छोड़े, कर्मों के बंधन तोड़े ।।5।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्लासप्तम्यां मोक्षमंगल मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

अर्घ्यावली

दोहा- तीर्थक्षेत्र गिरनार की, महिमा अगम अपार।
पुष्पांजलि कर पूजते, नत हो बारंबार।।

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(शंभू छंद)

जूनागढ़ की राजकुमारी, राजुलमति है जिसका नाम।
छप्पन कोटि बराती लेकर, गये ब्याहने को अभिराम।।
बाड़े में पशु बँधे देखकर, करुणा पूरित नेमि कुमार।
हो वैरागी दीक्षा लेने, चलकर के पहुँचे गिरनार।।
निज आतम का ध्यान लगाकर, किए घातिया कर्म विनाश।
अर्हत् पदवी को पाए प्रभु, कीन्हें केवलज्ञान प्रकाश।।
अष्टकर्म का नाश किए फिर, सिद्धशिला पर कीन्हा वास।
जिनकी अर्चा करके होती, भवि जीवों की पूरी आस।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री नेमिनाथ दीक्षा, ज्ञान,मोक्ष कल्याणक प्राप्त पवित्र गिरिनारगिरि सिद्धक्षेत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ के समवशरण में, जाके लीन्हे संयम धार।
मुनि बनकर के किए तपस्या, हरिवंशी अनिरुद्ध कुमार।।2।।

ॐ ह्रीं श्री गिरनार गिरि तीर्थ क्षेत्र स्थित प्रद्युम्न जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कामदेव पद पाने वाले, हरिवंशी प्रद्युम्न कुमार।
रत्नत्रय के धारी पावन, कहलाए मुनिवर अनगार।।3।।

ॐ ह्रीं श्री गिरनार गिरि तीर्थ क्षेत्र स्थित प्रद्युम्न जिनेन्द्राय जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भेद ज्ञान को पाने वाले, मुनिवर पावन शंभु कुमार।
मुक्ती पद के राही बनकर, किए स्व पर का जो उपकार।।4।।

ॐ ह्रीं श्री गिरनार गिरी तीर्थ क्षेत्र स्थित शंभु कुमार जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रथम टोंक पर बना जिनालय, जिसमें नेमिनाथ भगवान।
मूलनायक जिनवर की प्रतिमा, श्याम रंग की महिमा वान।।
जिनकी अर्चा करते हैं हम, तीन योग से अपरंपार।
हम भी मोक्ष मार्ग को पाएँ, वंदन करते बारंबार।।5।।

ॐ ह्रीं गिरनारगिरि तीर्थ क्षेत्र स्थित प्रथम टोंक जिनालय स्थित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- हो विरक्त त्यागे सभी, राज पाट गृह जाल।
नेमिनाथ जिनराज की, गाते हम जयमाल।।

तर्ज- जहाँ डाल-डाल पर सोने.......

नृप सौरीपुर के समुद्र विजय की, शिवादेवि थी रानी।
प्रिय शिवादेवि थी रानी।
सुत यदुवंशी श्री कृष्ण नारायण, हुए जगत कल्याणी।।
नृप हुए जगत् कल्याणी।
तीर्थंकर पद धारी भ्राता, नेमिनाथ कहलाए।
प्रभु सोलहकारण भव्य भावना, पूर्व भवों में भाए।।
शुभ पूर्व भवों में भाए........।
पितु तात भ्रात सब मिलकर जिनका, ब्याह रचाने आए।।1।।
सब छप्पन कोटि बराती मिलकर, जूनागढ़ को जाते।
बाड़े में बंदी देखे पशु, करुणामयी रंभाते।।
प्रभु करुणामयी रंभाते।
तव नेमिकुँवर जी करुणा करके, सारे पशू छुड़ाए।।2।।
यह देख दशा संसार की नेमी, मन वैराग्य जगाए।
चल दिए आप गिरनार सुगिरि पे, पावन संयम पाए।।
प्रभु पावन संयम पाए।
घटना सुनकर राजुलमति के, आँख में आँसू आए।।3।।
यह दृश्य देखकर राजुल ने भी, नेमि का साथ निभाया।
तब स्वजन और परिजन ने राजुल, को भारी समझाया।
को भारी समझाया।
वैरागिन राजुल को भी तब, कोई रोक ना पाए।।4।।

वैराग्यमयी यह घटना सुनकर, लोग द्रवित हो जाते।
रागी हैं जो जीव जगत के, अपने अश्रु बहाते।
वे अपने अश्रु बहाते।।
वैराग्यमयी यह दृश्य देखकर, मन वैराग्य जगाए।।5।।
प्रभु नेमिनाथ जी आत्मध्यान कर, केवलज्ञान जगाते।
फिर कर्म नाशकर गिरनारी से ,मोक्ष महापद पाते।।
प्रभु मोक्ष महापद पाते।
हम 'विशद' मोक्ष पद पाने की शुभ, सतत् भावना भाएँ।।6।।
दोहा- पशुओं की रक्षा किये, होके करुणावान।
बंधन खुलवाए प्रभू, नेमिनाथ भगवान।

ॐ ह्रीं श्री गिरनार गिरि तीर्थ क्षेत्राय नेमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-श्रद्धा से लेते सभी, नेमी प्रभू का नाम।
शिव पद हमको भी मिले, करते विशद प्रणाम।।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

पावापुर तीर्थ क्षेत्र पूजा

स्थापना

शुभ पुण्य धरा पावापुर की, है विशद सरोवर मनहारी।
प्रभु महावीर जी ध्यान किए, कर योग रोध मंगलकारी।।
जो कर्म नाश करके सारे, निज के स्वरूप को प्रगटाते।
आह्वानन् करते भाव सहित, निज हृदय कमल में तिष्ठाते।।
दोहा- ध्यान लगाए वीर जिन, किए कर्म का नाश।
कर्म नाश करके प्रभू, पाए शिवपुर वास।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री महावीर निर्वाणभूमि पावापुरी सिद्धक्षेत्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(हरिगीता छंद)

मोह के तूफान दुख की, घोर वर्षा कर रहे।
छतरी बिना सम्यक्त्व के भवि, जीव दुख से डर रहे।।
चारित्र की नौका चढ़े जो, पार भव का पाएँगे।
पावापुरी की वंदना कर, शिव महल को जाएँगे।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री महावीर निर्वाणभूमि पावापुरी सिद्धक्षेत्र जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव राग की जो आग जलती, भस्म यह जग हो रहा।
हैं मोक्ष के राही पथिक जो, हृदय उनका रो रहा।।
यह राग आग बुझे मेरी प्रभु, मुक्ति भव से पाऐंगे।
पावापुरी की वंदना कर, शिव महल को जाएँगे।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री महावीर निर्वाणभूमि पावापुरी सिद्धक्षेत्र संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्याय पुद्गल की विनश्वर, में फँसा इंसान है।
हो मुक्ति जिन भक्ती किए, मेरा यही अरमान है।।
अक्षत चढ़ा अनुपम अलौकिक, सुपद अक्षत पाऐंगे।
पावापुरी की वंदना कर, शिव महल को जाएँगे।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री महावीर निर्वाणभूमि पावापुरी सिद्धक्षेत्र अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कंटक हटा विद्वेष की हम, प्रेम का सिंचन करें।
परिवार यह संसार लगता, आत्म का चिंतन करें।।
चारित्र का उपवन खिलाकर, मुक्ति पथ अपनाऐंगे।
पावापुरी की वंदना कर, शिव महल को जाएँगे।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री महावीर निर्वाणभूमि पावापुरी सिद्धक्षेत्र कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम भूख से तन की तनिक सी, रात दिन व्याकुल हुए।
हो दूर मन की भूख कब यह, सोच कर आकुल हुए।।
नैवेद्य अर्पण हम करें, चारित्र को अपनाऐंगे।
पावापुरी की वंदना कर, शिव महल को जाएँगे।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री महावीर निर्वाणभूमि पावापुरी सिद्धक्षेत्र क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है दर्श की पावन दिवाली, शुभ दशहरा ज्ञान का।
फिर क्यों भटकते हैं तिमिर में, नाश हो अज्ञान का।।
जिन दीप से निज दीप जलता, हम यहाँ प्रजलाएँगे।
पावापुरी की वंदना कर, शिव महल को जाएँगे।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री महावीर निर्वाणभूमि पावापुरी सिद्धक्षेत्र मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान मिथ्या मोह से हम, कर्म का बंधन किए।
है अर्चना शुभ क्रिया सच्ची, ध्यान न उसका दिए।।
अब धूप से निज ज्ञान पाने,अग्नि में प्रजलाएँगे ।
पावापुरी की वंदना कर, शिव महल को जाएँगे।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री महावीर निर्वाणभूमि पावापुरी सिद्धक्षेत्र अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नित राग के या द्वेष के या, मोह के फल मिल रहे।
भूले स्वयं को जिन प्रभू को, हाय किस काबिल रहे।।
जिन भक्ति फल वैराग्य अंतस्, में स्वयं प्रगटाएँगें।।
पावापुरी की वंदना कर, शिव महल को जाएँगे।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री महावीर निर्वाणभूमि पावापुरी सिद्धक्षेत्र मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्त्ता बने पर के कभी, भोक्ता बने स्वामी बने।
अभिमान ऊँचे हिम सुगिरि से, पर बसे ऊँचे तने।।
हम चढ़ाएँ अर्घ्य पावन, विशद शिवपद पाएँगे।
पावापुरी की वंदना कर, शिव महल को जाएँगे।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री महावीर निर्वाणभूमि पावापुरी सिद्धक्षेत्र अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– नाथ! कृपा बरसाइये, भक्त करें अरदास।
शिवपथ के राही बनें, पूरी हो मम आस।। *(शांतये शांतिधारा)*
गुण अनन्त के कोष जिन, सहस्त्र आठ हैं नाम।
पुष्पाञ्जलि करते 'विशद', करकेचरण प्रणाम।। *(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)*

पंचकल्याणक के अर्घ्य

षष्ठी आषाढ़ सुदि पाए, सुर रत्न की झड़ी लगाए।
चहुँ दिश में छाई लाली, मानो आ गई दिवाली।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ सुदी षष्ठी गर्भकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरस सुदी चैत की आई, जन्मोत्सव की घड़ी गाई।
प्राणी जग के हर्षाए, खुश हो जयकार लगाए।।2।।

ॐ ह्रीं चैत सुदी तेरस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सित दशमी गाई, प्रभु ने जिन दीक्षा पाई।
मन में वैराग्य जगाया, अंतर का राग हटाया।।3।।

ॐ ह्रीं अगहन सुदी दशमी तपकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सु दशमी पाए, प्रभु केवलज्ञान जगाएँ।
सुर समवशरण बनवाए, जिन दिव्यध्वनि सुनाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाख सुदी दशमी केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की सांकल तोड़े, मुक्ती से नाता जोड़े।
कार्तिक की अमावस पाए, शिवपुर में धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं कार्तिक अमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्यावली

दोहा- पावापुर जी तीर्थ है, मंगलमयी महान्।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, जिनपद महिमावान ।।

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(चौपाई छंद)

जल मंदिर में अति प्राचीन, चरण वीर के हैं आसीन।
चढ़ा रहे हैं पावन अर्घ्य, पाने को हम सुपद अनर्घ्य।।1।।

ॐ ह्रीं पावापुरी सरोवर मध्यस्थित जल मंदिरे भगवनमहावीर चरण कमलयोः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गौतम स्वामी के चरणार, पूज रहे हम बारंबार।
चढ़ा रहे हैं पावन अर्घ्य, पाने को हम सुपद अनर्घ्य।।2।।

ॐ ह्रीं पावापुरी सरोवर मध्यस्थित जल मंदिरे गौतमगणधर चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुधर्म स्वामी ऋषिराज, के हम चरण पूजते आज।
चढ़ा रहे हैं पावन अर्घ्य, पाने को हम सुपद अनर्घ्य।।3।।

ॐ ह्रीं पावापुरी सरोवर मध्यस्थित जल मंदिरे श्री सुधर्मास्वामि गणधरचरणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन मंदिर में जिन भगवान, जिनका हम करते गुणगान
चढ़ा रहे हैं पावन अर्घ्य, पाने को हम सुपद अनर्घ्य।।4।।

ॐ ह्रीं पावापुरी सिद्धक्षेत्रस्य दिगंबर जिनमंदिर परिसरे निर्मित जिनालयेषु विराजित समस्त जिनबिंबेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल मंदिर के आगे जान, पाण्डुक शिला पे जिन भगवान।
चढ़ा रहे हैं पावन अर्घ्य, पाने को हम सुपद अनर्घ्य।।5।।

ॐ ह्रीं पावापुरीसिद्धक्षेत्रे जलमंदिर सम्मुखे विराजमान तीर्थंकर महावीर खड्गासन जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावापुर है तीर्थ महान्, करते हम जिनका गुणगान।
चढ़ा रहे हैं पावन अर्घ्य, पाने को हम सुपद अनर्घ्य।।6।।

ॐ ह्रीं पावापुर तीर्थक्षेत्र स्थित महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मुख्य जिनालय के पीछे, श्री वीर प्रभू खड्गासन वान।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, भाव सहित करते गुणगान।।
शासन नायक इस युग के है, अंतिम तीर्थंकर महावीर।
भव्य जीव जो अर्चा करते, हरो शीघ्र ही उनकी पीर।।7।।

ॐ ह्रीं पावापुर तीर्थक्षेत्र स्थित श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खड़गासन जिनबिंब के सम्मुख, हैं त्रिमूर्तियाँ महिमावान।
पद्मासन हैं मध्य में एवं, आर्श्व पार्श्व खड़गासन वान।।
शासन नायक इस युग के हैं, अंतिम तीर्थंकर महावीर।
भव्य जीव जो अर्चा करते, हरो शीघ्र ही उनकी पीर।।8।।

ॐ ह्रीं पावापुर तीर्थक्षेत्र स्थित श्री पारसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाण्डुक शिला बनी है पावन, जिसमें प्रतिमा चारों ओर।
धवल सुमंगल शोभित है जो, करती मन को भाव विभोर।।
शासन नायक इस युग के हैं, अंतिम तीर्थंकर महावीर।
भव्य जीव जो अर्चा करते, हरो शीघ्र ही उनकी पीर।।9।।

ॐ ह्रीं पावापुर तीर्थक्षेत्र स्थित पांडुक शिला विराजमान श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरूण वर्ण में खड्गासन प्रभु, शोभित होते अपरंपार।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, विशद भाव से बारंबार।।
शासन नायक इस युग के हैं, अंतिम तीर्थंकर महावीर।
भव्य जीव जो अर्चा करते, हरो शीघ्र ही उनकी पीर।।10।।

ॐ ह्रीं पावापुर तीर्थक्षेत्र स्थित श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- महावीर भगवान का, करते है गुणगान।
महिमा गाते आपकी, पाने शिव सोपान।।

ॐ ह्रीं पावापुर तीर्थक्षेत्र स्थित श्री महावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

जयमाला

दोहा- महावीर निर्वाण भू ,पावापुर है नाम।
पद्म सरोवर मध्य शुभ, बारंबार प्रणाम।।

शंभू छंद

जय-जय तीर्थ क्षेत्र पावापुर, महावीर पाए निर्वाण।
इस युग के शासन नायक हैं, अंतिम तीर्थंकर भगवान।।
निज में निज को ध्याकर जिनने,निज स्वरूप को प्रगटाया।
धर्म तीर्थ का किए प्रवर्तन, तीर्थंकर पद प्रभु पाया।।1।।
गुण अनंत विकसित कर निज के, मोक्ष धाम को प्राप्त किया।
कदम पड़े जिस भू पर प्रभु के, उसको तीरथ बना दिया।।
सोलहकारण भाते हैं जो, उस रूप स्वयं हो जाते हैं।
तीर्थंकर प्रकृति वे नर ही, स्वयं बंध कर पाते हैं ।।2।।
हो उदय प्राप्त तीर्थंकर पद, जग का कल्याण करें स्वामी।
दें दिव्य देशना जीवों को, प्रभु होकर के अंतर्यामी।।
फिर अंत प्राप्त कर आयू का, निर्वाण सुपद को पाते हैं।
सौधर्म इन्द्र आदिक मिलकर, प्रभु का कल्याण मनाते हैं।।3।।
ऋषि मुनि गणधर विद्याधर भी, जिन पद में वंदन करते हैं।
निर्वाण क्षेत्र की पूजा कर, निज कर्म कालिमा हरते हैं।।
निर्वाण क्षेत्र की पावन रज, अपने जो शीश चढ़ाते हैं।
वे पुण्य सुयश को पाकर के, निर्वाण सुपद को पाते हैं।।4।।

चारण ऋद्धीधारी ऋषि भी, उस भूमि का वंदन करते हैं।
हम पूजा भक्ती भावों से, करके अभिवंदन करते हैं।।
निर्वाण भूमि की यात्रा कर ,भव–भव का भ्रमण नशाऐंगे।
तीर्थेश प्रभू निर्वाण भूमि, की पद रज माथ लगाऐंगे।।5।।

दोहा–अंत कुपंथों का किए, महावीर जिन संत।
राही बनकर मोक्ष के, हुए आप भगवंत।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर निर्वाण भू पावापुर सिद्धक्षेत्रे निर्वाण प्राप्त सर्व जिनेन्द्रेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा– भगवत्ता को प्राप्त कर, पाए पद निर्वाण।।
विशद भावना है मेरी, पाएँ शिव सोपान।।

। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

जाप्य–ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थकर निर्वाण कल्याणक प्राप्त सर्व तीर्थ क्षेत्रेभ्यो नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा– नमन श्री जिन सिद्ध पद, प्राप्त किए निर्वाण।
सर्व तीर्थ निर्वाण को, बारंबार प्रणाम।।

(चाल छंद)

है अष्टापद जी भाई, जिसकी फैली प्रभुताई।
श्री ऋषभदेव जिन स्वामी, शिव पाए मुक्ती गामी।।1।।
भरतादिक केवलज्ञानी, पाए हैं मुक्ती रानी।
जो तीर्थ पूज्य कहलाए, जीवों से पूजा जाए।।2।।
चंपापुर तीर्थ निराला, है मंगल करने वाला।
मंदार सुगिरि शुभकारी, है अतिशय जन मनहारी।।3।।
जिन वासुपूज्य कहलाए, पाँचों कल्याणक पाए।
हैं प्रथम बालयति स्वामी, पावन जो अंतर्यामी।।4।।
है उर्जयंत गिरनारी, शुभ तीर्थ क्षेत्र मनहारी।
यदुवंशी नृप कहलाए, जो सौरीपुर से आए।।5।।

मन में वैराग्य जगाए, शिव नेमीश्वर जी पाए।
प्रद्युम्न आदि मुनि भाई, ने भी शुभ मुक्ती पाई।।6।।
पावापुर तीर्थ कहाए, शिव महावीर जी पाए।
है पद्म सरोवर भाई, शुभ कमल खिले सुखदाई।।7।।
जल मंदिर में शुभकारी, जिन मंदिर है मनहारी।
जिन चरण पूजते प्राणी, जो हैं जग जन कल्याणी।।8।।
है तीर्थराज शुभकारी, सम्मेद शिखर मनहारी।
जो शाश्वत तीर्थ कहाए, त्रैकालिक जिन शिव पाए।।9।।
इस कालिक जिनवर गाए, जिन बीस मोक्ष पद पाए।
जिस भू से जिन शिव पाए, निर्वाण क्षेत्र कहलाए।।10।।

दोहा- तीर्थंकर आदिक मुनी, पाते जो निर्वाण।
तीर्थक्षेत्र कहलाए वह, मुक्ती का सोपान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर, अष्टापद, चंपापुर, गिरनार, पावापुर सिद्ध क्षेत्र समूहेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा-विशद भाव के साथ हम, करते हैं गुणगान।
पूज्य रहे त्रय लोक में, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

प्रशस्ति-स्वस्ति श्री वीर निर्वाण सम्वत् 2549 विक्रम सम्वत् 2079 मासोत्तमेमासे शुभे मासे मार्गशीर्ष मासे शुक्ल पक्षे शुभ तिथि एकम् रविवासरे श्री कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कारगणे सेनगच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्या जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्या जातास्तत् शिष्य विमलसागराचार्या जातास्तत् शिष्यः भरतसागराचार्या विरागसागराचार्या ततशिष्यः विशदसागराचार्य कर-कमले श्री पंच तीर्थ निर्वाण तीर्थ क्षेत्र विधान लिख्यते इति शुभं भूयात्।

सर्व आचार्य परमेष्ठी अर्घ्य

पूर्वाचार्यश्री कुन्द कुन्दादि, आदिसागराचार्य प्रवर।
महावीर कीर्ति वीर सिन्धु शिव, विमल सिन्धु सन्मति सागर।।
भरत सिन्धु कुन्थुसागर जी, विद्यानन्द विद्यासागर।
पुष्पदन्त गुरु विराग सिन्धुपद, वन्दन विशद मेरा सादर।।

ॐ ह्रूँ सर्व आचार्य परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण क्षेत्र चालीसा

दोहा– परमेष्ठी हैं लोक में, पावन परम ऋशीश।
जिनके चरणों में विशद, झुका रहे हम शीश।।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण का, चालीसा सुखकार।
गाते हैं हम भाव से, पाने भवदधि पार।।

(चौपाई)

श्री सम्मेद शिखर मनहारी, शाश्वत तीर्थ है मंगलकारी।।1।।
तीर्थंकर पदवी के धारी, अन्य ऋषीश्वर जो अनगारी।।2।।
काल अनादी मुक्ती पाए, सर्व अनंतानंत कहाए।।3।।
आगे वीतरागता धारी, शिव पाऐंगे मुनि अनगारी।।4।।
यह अवसर्पिणी काल कहलाए, संत अनेक मोक्ष पद पाए।।5।।
गणधर कूट से गणधर स्वामी, शिव पद पाते अंतर्यामी।।6।।
कूट ज्ञानधर शुभ कहलाए, कुंथुनाथ जी शिव पद पाए।।7।।
कूट मित्रधर आगे आए, श्री नमि जिनवर मोक्ष सिधाए।।8।।
नाटक कूट रहा शुभकारी, अरहनाथ का मंगलकारी।।9।।
संबल कूट भी है मनहारी, हुए मल्लि जिनवर शिवकारी।।10।।
संकुल कूट श्रेष्ठ कहलाए, श्रेयनाथ जी शिव पद पाए।।11।।
सुप्रभ कूट विशेष कहाया, पुष्पदंत जिनवर का गाया।।12।।
कूट पद्मप्रभ स्वामी, हुए जहाँ से अंतर्यामी।।13।।
निर्जर कूट से शिवपद पाए, मुनिसुव्रत तीर्थंकर गाए।।14।।
ललित कूट फिर आगे आए, चन्द्रप्रभ जी मुक्ती पाए।।15।।
विद्युतवर शुभ कूट कहाए, शीतल जिनवर मोक्ष सिधाए।।16।।
कूट स्वयंभू है मनहारी, जिनानंत का जो शिवकारी।।17।।
धवल कूट से शिव पद पाए, श्री संभव जिनराज कहाए।।18।।
आनंद कूट पे आनंद आए, अभिनंदन जी शिवपद पाए।।19।।

कूट सुदत्त है मंगलदायी, धर्मनाथ का मोक्ष प्रदायी।।20।।
अविचल कूट पे ध्यान लगाए, सुमतिनाथ जी शिव पद पाए।।21।।
कूट कुंदप्रभ को हम ध्याते, शांतिनाथ पद शीश झुकाते।।22।।
कूट प्रभास पे जाएँ भाई, जिन सुपार्श्व का मोक्ष प्रदायी।।23।।
कूट सुवीर है जानी मानी, विमल नाथ जिन की कल्याणी।।24।।
कूट सिद्धवर श्रेष्ट कहाए, अजितनाथ जी शिव पद पाए।।25।।
स्वर्णभद्र शुभ कूट को ध्याते, पार्श्व प्रभू पद शीश झुकाते।।26।।
अष्टापद है तीर्थ निराला, जग जन का मन हरने वाला।।27।।
पर्वत जो कैलाश कहाए, आदिनाथ जी शिव पद पाए।।28।।
दश हजार मुनि और बताए, चक्री भरत भी मोक्ष सिधाए।।29।।
नागकुमार जीवंधर स्वामी, कामदेव पद पाए नामी।।30।।
निज आतम का ध्यान लगाए, कर्म नाशकर शिव पद पाए।।31।।
उर्जयंत गिरनार कहाए, नेमिनाथ जिन शिव पद पाए।।32।।
शंभू प्रद्युम्न अनिरुद्ध भी जानो, मोक्ष महापद पाए मानो।।33।।
कोटि बहत्तर सात सौ भाई, ने भी गिरि से मुक्ती पाई।।34।।
चंपापुर वासुपूज्य कहाए, गिरि मंदार से शिव पद पाए।।35।।
एक हजार अन्य मुनि गाए, इसी तीर्थ से मोक्ष सिधाए।।36।।
पावापुर है मंगलकारी, पद्म सरोवर है मनहारी।।37।।
महावीर जी शिव पद पाए, पूज्य तीर्थ निर्वाण कहाए।।38।।
जहाँ से मुनिवर शिव पद पाए,वह निर्वाण क्षेत्र कहलाए।।39।।
हम निर्वाण क्षेत्र सब ध्याएँ, हम भी मोक्ष महापद पाएँ।।40।।

सोरठा

पूज्य तीर्थ निर्वाण, ध्याते हैं हम भाव से।
करते हैं गुणगान, तीन योग से हम विशद।।
चालीसा चालीस, दीप धूप के साथ में।
चरण झुकाएँ शीश, वे पावें निर्वाण पद।।

आरती

(तर्ज- आज करें श्री विशदसागर की...)

आज करें जिन तीर्थंकर की, आरती अतिशयकारी।
घृत के दीप जलाकर लाए, जिनवर के दरबार।।
हो भगवन्! हम सब उतारें मंगल आरती.....।

सोलह कारण भव्य भावना, पूर्व भवों में भाई।
शुभ तीर्थंकर प्रकृति पद में, तीर्थंकर के पाई।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल... ।।1 ।।

मिथ्या कर्म नाशकर क्षायक, सम्यक्दर्शन पाया।
प्रबल पुण्य का योग प्रभु के, शुभ जीवन में आया।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल.. ।।2 ।।

गर्भ जन्मकल्याणक आदिक, आकर देव मनाते।
केवलज्ञान प्रकट होने पर, समवशरण बनवाते।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल... ।।3 ।।

समवशरण के मध्य प्रभु की, शोभा है मनहारी।
उभय लक्ष्मी से सज्जित है, महिमा अतिशयकारी।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल... ।।4 ।।

सर्व कर्म को नाश प्रभु जी, मोक्ष महल में जाते।
विशद सौख्य में लीन हुए फिर, लौट कभी न आते।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल... ।।5 ।।

तीर्थंकर पद सर्वश्रेष्ठ है, उसको तुमने पाया।
उस पदवी को पाने हेतु, मेरा मन ललचाया।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल.... ।।6 ।।

नाथ आपकी आरती करके, उसके फल को पाएँ।
जगत् वास को छोड़ प्रभु जी, मोक्ष महल को जाएँ।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल... ।।7 ।।

श्री सम्मेद शिखर कूटपूजन विधान

सम्मेदशिखर व्रत के 25 व्रत हैं, प्रथम गणधर की टोंक का फिर 24 तीर्थंकर के इस व्रत का फल नाना प्रकार के रोग, शोक, दुःख, संकट को दूर कर सम्पूर्ण मनोरथों को सफल करना है। जो यह व्रत करेंगे, वे सम्मेदशिखर की वंदना के समान अनेकों उपवासों का फल प्राप्त कर परम्परा से मोक्ष को प्राप्त करेंगे।

समुच्चय मंत्र (1) ॐ ह्रीं अर्हं सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्राय नमः। (2) ॐ ह्रीं अर्हं अनंतानंतप्रमसिद्धेभ्यो नमो नमः।

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र-

1. ॐ ह्रीं सिद्धवरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री अजितनाथ तीर्थंकराय नमः।
2. ॐ ह्रीं धवलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री संभवनाथ तीर्थंकराय नमः।
3. ॐ ह्रीं आनंदकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री अभिनंदननाथ तीर्थंकराय नमः।
4. ॐ ह्रीं अविचलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री सुमतिनाथ तीर्थंकराय नमः।
5. ॐ ह्रीं मोहनकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री पद्मप्रभनाथ तीर्थंकराय नमः।
6. ॐ ह्रीं प्रभासकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकराय नमः।
7. ॐ ह्रीं ललितकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री चंद्रप्रभनाथ तीर्थंकराय नमः।
8. ॐ ह्रीं सुप्रभकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री पुष्पदंतनाथ तीर्थंकराय नमः।
9. ॐ ह्रीं विद्युत्वरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री शीतलनाथ तीर्थंकराय नमः।
10. ॐ ह्रीं संकुलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकराय नमः।
11. ॐ ह्रीं सुवीरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री विमलनाथ तीर्थंकराय नमः।
12. ॐ ह्रीं स्वयंभूकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री अनंतनाथ तीर्थंकराय नमः।
13. ॐ ह्रीं सुदत्तकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री धर्मनाथ तीर्थंकराय नमः।
14. ॐ ह्रीं कुंदप्रभकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री शांतिनाथ तीर्थंकराय नमः।
15. ॐ ह्रीं ज्ञानधरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री कुंथुनाथ तीर्थंकराय नमः।
16. ॐ ह्रीं नाटककूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री अरहनाथ तीर्थंकराय नमः।
17. ॐ ह्रीं संबलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री मल्लिनाथ तीर्थंकराय नमः।
18. ॐ ह्रीं निर्जरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकराय नमः।
19. ॐ ह्रीं मित्रधरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री नमिनाथ तीर्थंकराय नमः।
20. ॐ ह्रीं सुवर्णकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय नमः।
21. ॐ ह्रीं कैलाशपर्वतात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री आदिनाथ तीर्थंकराय नमः।
22. ॐ ह्रीं चंपापुरीक्षेत्रात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री वासुपूज्य तीर्थंकराय नमः।
23. ॐ ह्रीं ऊर्जयंतगिरिक्षेत्रात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री नेमिनाथ तीर्थंकराय नमः।
24. ॐ ह्रीं पावापुरीसरोवरात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री महावीर तीर्थंकराय नमः।
25. ॐ ह्रीं वृषभसेनादिगौतमान्त्य-सर्वगणधरचरणेभ्यो नमः।

नोट- तीर्थंकरों के पचंकल्याणक की तिथियों में या अन्य भी विशेष अवसरों पर सम्मेद शिखर मण्डल की रचना कर भक्ति भाव से यह विधान करें। यदि अकेले करना है तो आप कभी भी मण्डल की रचना किए बिना थाली में भी अष्ट द्रव्य से यह विधान सम्पन्न कर सकते हैं।

स्तवन

तीर्थ अनादि त्रिकाल, जो कहलाए रे!।
सम्मेद शिखरजी हो-हो सम्मेद शिखर जी ।।
जिन तीर्थ कहाए रे!।
जीव यहाँ से मोक्ष गये, अपने सारे कर्म क्षये।
सिद्ध क्षेत्र वे कहलाते, भव्यों से पूजे जाते।।
ऐसे वे तीरथ हो-हो-ऐसे वे तीरथ शिवराह दिखाए रे!।।1।।
तीर्थ वंदना जो करते, कोष पुण्य से वे भरते।
संयम भाव जगाते हैं, विशद ज्ञान प्रगटाते हैं।।
ऐसे वे ज्ञानी हो-हो ऐसे वे ज्ञानी शिव पदवी पाए रे!।।2।।
धर्म प्राण यह देश कहा, जगत पूज्य अत एव रहा।
सभी धर्म का ध्यान करो, धर्मी का सम्मान करो।।
धर्मी ही जग में हो-हो-धर्मी ही जग में सद्धर्म बचाए रे!।।3।।
तीर्थ की रक्षा करो सभी , मिट ना पाए कोई कभी।
तीर्थों से ही धर्म चले, 'विशद'मोक्ष का मार्ग चले।
तीर्थों के हेतू हो-हो-तीर्थों के हेतू जी जान लगाओ रे!।।4।।

सम्मेद शिखर पूजन

स्थापना

तीर्थराज सम्मेदशिखर है, अतिशयकारी महिमावान।
कोटि कोटि मुनि मोक्ष पधारे, शाश्वत तीर्थक्षेत्र निर्वाण।।
भक्ति भाव से पूजन करने, श्री जिनवर का है आह्वान।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, करें विशद हम भी गुणगाान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

जल चंचलता परिहारी, जन्मादिक रोग निवारी।
हम तीर्थराज को ध्यायें , इस भव से मुक्ती पाए।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन भव ताप निवारी, भवि जीवों को शिवकारी।
हम तीर्थराज को ध्यायें , इस भव से मुक्ती पाए।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अक्षयपददायी, अनुपम है मोक्ष प्रदायी।
हम तीर्थराज को ध्यायें , इस भव से मुक्ती पाए।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ये सुमन सु मन कर्तारी, हैं काम रोग निरवारी।
हम तीर्थराज को ध्यायें , इस भव से मुक्ती पाए।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सरस मनहारी, हैं क्षुधा रोग परिहारी।
हम तीर्थराज को ध्यायें , इस भव से मुक्ती पाए।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह दीपक मोह निवारी, जग जीवों को शिवकारी।
हम तीर्थराज को ध्यायें , इस भव से मुक्ती पाए।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ धूप कर्म परिहारी, जो आठों रोग निवारी।
हम तीर्थराज को ध्यायें , इस भव से मुक्ती पाए।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सरस मोक्ष कर्तारी, पद दायक हैं अविकारी।
हम तीर्थराज को ध्यायें , इस भव से मुक्ती पाए।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अर्घ्य अनर्घ्य प्रदायी, जीवों को शिव पद दायी।
हम तीर्थराज को ध्यायें , इस भव से मुक्ती पाए।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती पाने के लिए, देते शांतीधार।
विशद भावना है यही, पाएँ भव से पार।।

शांति शांतिधारा

पुष्पांजलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।
भाते हैं ये भावना, शिवपथ हो अनुकूल।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

जयमाला

दोहा- शाश्वत तीरथराज है, गिरि सम्मेद महान्।
अर्चा करते भाव से, पाने पद निर्वाण।।

तर्ज- माता तू दया करके.........

जिनवर की भक्ती में, हर श्वांस समर्पित है।
क्या और करें अर्पण, यह जीवन अर्पित है।।
सब जीव अनादी से, जग में भटकाए हैं।
भोगों की आशा में, भारी दुख पाए हैं।।
निकले निगोद से तो, स्थावर में आए।
भू जल अग्नी वायू, तरुवर में उपजाए।।1।।

दुर्लभ चिंतामणि जैसी, पर्याय में उपजाए।
त्रस हुए भी कुचले, जल कट के दुख पाए।।
कभी हुए असंज्ञी तो, मन से भी हीन रहे।
सैनी जो निबल हुए, तो भी कई कष्ट सहे।।2।।
कभी क्रूर हुए सैनी, कई जीव मार खाए।
कर-कर मायाचारी, पशुगति फिर फिर पाए।।
कभी संक्लेश भावी, हो नरक में उपजाए।
वहाँ शीत उष्ण के भी, अतिशय कर दुख पाए।।3।।
जहाँ नित्य अशुभ लेश्या, परिणाम देह पाए।
पा अशुभ विक्रिया वेदन, कई अतिशय दुख पाए।।
कर्मों का फल पाके कोई, मनुज गति में आए।
निज कर्मों का क्षयकर, शुभ सिद्ध शिला जाए।।4।।
प्रभु रत्नत्रय पाके, निज कर्म नशाते हैं।
वे सिद्ध शुद्ध अविकल ,पद को प्रगटाते हैं।।
हम कर्म दहन करके, शिव पद को पाएंगे।
निज 'विशद' ज्ञान पाके, शिवपुर को जाएंगे।।5।।
दोहा- महिमा तीर्थ सम्मेद गिरि, की है अपरंपार।
विशद भाव से पूजते, नत हो बारंबार।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-तीर्थराज की वंदना , करके प्रभु गुणगान
मोक्षमार्ग पर जो बढ़ें ,पावें शिव सोपान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

पारसनाथ कूट से वंदना प्रारंभ विधि पूजा अर्घ्यावली

(दोहा)

श्री पारसनाथ जी की टोंक (स्वर्णभद्र कूट)

स्वर्ण कूट से शिव गये, पार्श्वनाथ जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।1।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित स्वर्णभद्रकूट से श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकरादि 82 करोड़ 84 लाख 45 हजार 742 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(स्वर्णभद्र कूट के दर्शन का फल सोलह करोड़ उपवास।)

नेमिनाथ भगवान जी की टोंक

ऊर्जयन्त से शिव गये, नेमिनाथ जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।2।।

ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित कूट से आषाढ़ सुदी सातै को श्री नेमिनाथ तीर्थंकरादि व 72 करोड़ 700 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री अजितनाथ जी की टोंक (सिद्धवर कूट)

कूट सिद्धवर से गये, अजितनाथ शिवराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सिद्धवरकूट से श्री अजितनाथ तीर्थंकरादि 1 अरब 80 करोड़ 54 लाख मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सिद्धवर कूट के दर्शन का फल बत्तीस करोड़ उपवास।)

श्री विमलनाथ जी की टोंक (सुवीर कूट)

सुवीर कूट से शिव गये, विमलनाथ जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुवीरकूट से श्री विमलनाथ तीर्थंकरादि 70 कोड़ाकोड़ी 60 लाख 6 हजार 742 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुवीर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री सुपार्श्वनाथ जी की टोंक (प्रभास कूट)

प्रभाष कूट से शिव गये, श्री सुपार्श्व जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित प्रभासकूट से श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकरादि 49 कोड़ाकोड़ी 84 करोड़ 72 लाख 7 हजार 7 सौ 42 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(प्रभास कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री महावीर भगवान जी की टोंक

पावापुर से शिव गये, महावीर जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पावापुर सिद्धक्षेत्र से कार्तिक वदी अमावस को श्री वर्द्धमान तीर्थंकरादि व 26 मुनि सहित मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ जी की टोंक (कुंदप्रभ कूट)

कूट कुंदप्रभ से गये, शांतिनाथ शिवराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित कुन्दप्रभकूट से श्री शांतिनाथ तीर्थंकरादि 9 कोड़ाकोड़ी 9 लाख 9 हजार 999 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(कुन्दप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री सुमतिनाथ जी की टोंक (अविचल कूट)

अविचल कूट से शिव गये, सुमतिनाथ जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित अविचलकूट से श्री सुमतिनाथ तीर्थंकरादि 1 कोड़ाकोड़ी 84 करोड़ 72 लाख 81 हजार 700 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अविचल कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री धर्मनाथ जी की टोंक (सुदत्तवर कूट)

सुदत्त कूट से शिव गये, धर्मनाथ जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुदत्तवरकूट से श्री धर्मनाथ तीर्थंकरादि 29 कोड़ाकोड़ी 19 करोड़ 9 लाख 9 हजार 795 मुनि मोक्ष पध ारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुदत्तवर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

चौबीस तीर्थंकरों के गणधरों की कूट का अर्घ्य

गणनायक ऋषभादि के, तारणतरण जहाज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।10।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी आदि गणधर देवग्राम उद्यान से आदि भिन्न-भिन्न, स्थानों से निर्वाण पधारे हैं तिनके चरणारविन्द को मेरा मन-वचन-काय से अत्यन्त भक्ति भाव से नमस्कार हो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुन्थुनाथ जी की टोंक (ज्ञानधर कूट)

कूट ज्ञानधर से गए, कुंथुनाथ शिवराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।11।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित ज्ञानधरकूट से श्री कुन्थुनाथ

तीर्थंकरादि 96 कोड़ाकोड़ी 96 करोड़ 32 लाख 96 हजार 742 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ज्ञानधर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री नमिनाथ जी की टोंक (मित्रधर कूट)

कूट मित्रधर से गये, नमीनाथ शिवराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।12।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित श्री नमिनाथ तीर्थंकरादि 9 कोड़ाकोड़ी 1 अरब 45 लाख 7 हजार 9 सौ 42 मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मित्रधर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री अरहनाथ जी की टोंक (नाटक कूट)

नाटक कूट से शिव गये, अरहनाथ जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।13।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित नाटक कूट से श्री अरहनाथ तीर्थंकरादि 99 करोड़ 99 लाख 99 हजार 999 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नाटक कूट के दर्शन का फल छियानवे करोड़ उपवास।)

श्री मल्लिनाथ जी की टोंक (संबल कूट)

संबल कूट से शिव गये, श्री मल्ली जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।14।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित संबलकूट से श्री मल्लिनाथ तीर्थंकरादि 99 करोड़ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(संबल कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री श्रेयनाथ जी की टोंक (संकुल कूट)

संकुल कूट से शिव गये, श्री श्रेयांस जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।15।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित संकुलकूट से श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकरादि 99 कोड़ाकोड़ी 99 करोड़ 99 लाख 9 हजार 5 सौ 42 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(संकुल कूट के दर्शन का फल एक करोड़ प्रोषध उपवास।)

श्री पुष्पदंत जी की टोंक (सुप्रभ कूट)

सुप्रभ कूट से शिव गये, पुष्पदंत जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।16।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुप्रभकूट से श्री पुष्पदंत तीर्थंकरादि 1 कोड़ाकोड़ी 99 लाख 7 हजार 480 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री पद्मप्रभ जी की टोंक (मोहन कूट)

मोहन कूट से शिव गये, पद्म प्रभ जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।17।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित मोहनकूट से श्री पदमप्रभु तीर्थंकरादि 99 कोड़ाकोड़ी 87 लाख 43 हजार 727 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मोहन कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री मुनिसुव्रतनाथ जी की टोंक (निर्जर कूट)

निर्जर कूट से शिव गये, मुनिसुव्रत जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।18।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित निर्जरकूट से श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकरादि 99 कोड़ाकोड़ी 9 करोड़ 99 लाख 999 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(निर्जर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री चन्द्रप्रभ जी की टोंक (ललित कूट)

ललितकूट से शिव गये, चन्द्रप्रभ जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।19।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित ललितकूट से श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकरादि 900 चौरासी अरब 72 करोड़ 80 लाख 84 हजार 595 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ललित कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

आदिनाथ भगवान जी की टोंक

अष्टापद से शिव गये, आदिनाथ जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।20।।

ॐ ह्रीं श्री कैलाश सिद्धक्षेत्र स्थित कूट से माघ सुदी चौदस को श्री आदिनाथ तीर्थंकरादि व दस हजार सहित मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतलनाथ जी की टोंक (विद्युत कूट)

विद्युतकूट से शिव गये, श्री शीतल जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।21।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित विद्युतकूट से श्री शीतलनाथ तीर्थंकरादि 18 कोड़ाकोड़ी 42 करोड़ 32 लाख 42 हजार 905 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विद्युतवर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री अनंतनाथ जी की टोंक (स्वयंभू कूट)

कूट स्वयंभू से गये, शिव अनंत जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।22।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित स्वयंप्रभकूट से श्री अनन्तनाथ तीर्थंकरादि 96 कोड़ाकोड़ी 70 करोड़ 70 लाख 70 हजार 700 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(स्वयंप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री संभवनाथ जी की टोंक (धवल कूट)

धवल कूट से शिव गये, श्री संभव जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।23।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित धवलकूट से श्री सम्भवनाथ तीर्थंकरादि 9 कोड़ाकोड़ी 72 लाख 42 हजार 500 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(धवल कूट के दर्शन का फल ब्यालीस लाख उपवास।)

वासुपूज्य भगवान जी की टोंक

चंपापुर से शिव गये, वासुपूज्य जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।24।।

ॐ ह्रीं श्री चम्पापुर सिद्धक्षेत्र से भादवा सुदी चौदस को श्री वासुपूज्य तीर्थंकरादि 1 हजार मुनि मंदारगिरि से मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अभिनंदननाथ जी की टोंक (आनंद कूट)

आनंद कूट से शिव गये, अभिनंदन जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।25।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित आनंदकूट से श्री अभिनन्दन तीर्थंकरादि 72 कोड़ाकोड़ी 70 करोड़ 70 लाख 42 हजार 700 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(आनन्द कूट के दर्शन का फल एक लाख उपवास।)

जयमाला

दोहा- शास्वत तीरथ राज है, गिरि सम्मेद महान।
अर्चा करते भाव से , पाने पद निर्वाण।।

छन्द–तामरस

जय जय तीरथ राज नमस्ते, तारण तरण जहाज नमस्ते।
गणधर पद चौबीस नमस्ते, सिद्ध अनन्त ऋषीश नमस्ते।।1।।
प्रथम ज्ञानधर कूट नमस्ते, कूट मित्रधर पूज्य नमस्ते।
नाटक कूट प्रधान नमस्ते, संवल कूट महान नमस्ते।।2।।
संकुल कूट विशेष नमस्ते, सुप्रभ कूट जिनेश नमस्ते।
मोहन कूट पे जाय नमस्ते, निर्जर कूट जिनाय नमस्ते।।3।।
ललित कूट है दूर नमस्ते, अष्टापद भरपूर नमस्ते।
विद्युतवर मनहार नमस्ते, कूट स्वयंभू सार नमस्ते।।4।।
धवल कूट है स्वेत नमस्ते, चम्पापुर जी क्षेत्र नमस्ते।
आनन्द कूट गिरीश नमस्ते, कूट सुदत्त ऋषीश नमस्ते।।5।।
अविचल कूट मुनीश नमस्ते,कूट कुन्दप्रभ शीश नमस्ते।
पावापुर जी क्षेत्र नमस्ते, कूट प्रभास विशेष नमस्ते।।6।।
पावन कूट सुवीर नमस्ते, कूट सिद्धवर तीर नमस्ते ।
गिरि गिरनार अटूट नमस्ते, स्वर्णभद्र शुभ कूट नमस्ते।।7।।

दोहा- महिमा तीर्थ सम्मेद गिरि, की है अपरम्पार।
"विशद" भाव से पूजते, नत हो बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो: नम: अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीर्थराज की वंदना, करके प्रभु गुणगान।
मोक्षमार्ग पर जो बढ़ें, पावें शिव सोपान।।

।। इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीर्थराज श्री सम्मेद शिखर पूजन

स्थापना

तीर्थराज सम्मेद शिखर जी भाई रे!।
पूज्य लोक में रहा अनादी भाई रे!।।
जिसकी अर्चा करने को हम भाई रे!।
हृदय में आह्वानन् करते हैं भाई रे!।।

दोहा- तीर्थराज की वंदना, करते जीव त्रिकाल।
करें करावें भाव से, वे हों मालामाल।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन्! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

प्रासुक जल के कलश भराए भाई रे!।
भाव सहित हम चढ़ा रहे हैं भाई रे!।।
श्री सम्मेद शिखर है पावन भाई रे!।
जिन अर्चा जीवों को मोक्ष प्रदायी रे!।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन सुरभित घिस के लाए भाई रे!।
है भव ताप निवारक जग में भाई रे!।
श्री सम्मेद शिखर है पावन भाई रे!।
जिन अर्चा जीवों को मोक्ष प्रदायी रे!।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत धोके लाए भाई रे!।
भवि जीवों को अक्षय सुपद प्रदायी रे!।।
श्री सम्मेद शिखर है पावन भाई रे!।
जिन अर्चा जीवों को मोक्ष प्रदायी रे!।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अक्षय पद प्राप्ते अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प थाल में भर के लाए भाई रे!।
काम रोग के नाशी हैं जो भाई रे!।।
श्री सम्मेद शिखर है पावन भाई रे!।
जिन अर्चा जीवों को मोक्ष प्रदायी रे!।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के शुभ नैवेद्य बनाए भाई रे!।
क्षुधा रोग के नाशी गाए भाई रे!।।
श्री सम्मेद शिखर है पावन भाई रे!।
जिन अर्चा जीवों को मोक्ष प्रदायी रे!।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गौ घृत के यह दीप जलाए भाई रे!।
मोह महातम नाशी गाए भाई रे!।।
श्री सम्मेद शिखर है पावन भाई रे!।
जिन अर्चा जीवों को मोक्ष प्रदायी रे!।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में शुभ धूप जलाए भाई रे!।
अष्ट कर्म का नाश करें हम भाई रे!।।
श्री सम्मेद शिखर है पावन भाई रे!।
जिन अर्चा जीवों को मोक्ष प्रदायी रे!।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल रसदार मँगाए भाई रे!।
मोक्ष महापद पाने हेतु भाई रे!।।
श्री सम्मेद शिखर है पावन भाई रे!।
जिन अर्चा जीवों को मोक्ष प्रदायी रे!।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाए भाई रे!।
पद अनर्घ्य हम भी पा जाएँ भाई रे!।।
श्री सम्मेद शिखर है पावन भाई रे!।
जिन अर्चा जीवों को मोक्ष प्रदायी रे!।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीन लोक में पूज्य है, काल अनादि त्रिकाल।
तीर्थराज सम्मेदगिरि, की गाते जयमाल।।

तर्ज- भाई रे!-----

तीर्थराज सम्मेद शिखर की, महिमा अतिशायी।
तीर्थंकर की दिव्यध्वनि शुभ, आगम में गाई।।
भव्य जन पूजो हो भाई!।
तीर्थक्षेत्र की भाव वंदना, जानों शिवदायी।
भव्य जन पूजो हो भाई!।।1।।

भूतकाल में सिद्ध अनंता-नंत हुए भाई।
तीर्थंकर हो केवलज्ञानी, पाए प्रभुताई।।
भव्य जन पूजो हो भाई!।।2।।

हुण्डावसर्पिणी काल रहा यह, इसमें भी भाई।
बीस तीर्थंकर एवं मुनि कइ, शिव पाए भाई।।
भव्य जन पूजो हो भाई!।।3।।

काल अनागत में तीर्थंकर, एवं ऋषि भाई।
मोक्ष महापदवी पाऐंगे, निज आतम ध्यायी।।
भव्य जन पूजो हो भाई!।।4।।

अक्षयानंत जीव राशी से, भव्य जीव भाई।
रत्नत्रय पा करें साधना, मन में हर्षाई।।
भव्य जन पूजो हो भाई!।।5।।

गुप्ति समीती धर्मानुप्रेक्षा, से संवर भाई।
तप से कर्म निर्जरा कर जो, शिव पाएँ भाई।।
भव्य जन पूजो हो भाई!।।6।।

तीर्थ वंदना करें कराएँ, मन में हर्षाई।
पुण्य प्राप्त करके अनुक्रम से, शिव पाएँ भाई।।
भव्य जन पूजो हो भाई!।।7।।

महिमा तीर्थ वंदना की शुभ, संतों ने गाई।
'विशद' भाव के धारी पाएँ, मुक्ती अतिशाई।।
भव्य जन पूजो हो भाई!।।8।।

दोहा- गये अनादी जाएंगे, शिवपुर जीव अनंत।
अर्घ्य चढ़ाते जिन चरण, पाने भव का अंत।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- कण-कण पावन है विशद, भू का अतिशयवान।
शीश झुकाएँ भक्त जन, पाएँ पुण्य निधान।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

चौपड़ा कुंड स्थित जिनालय का अर्घ्य

तीर्थराज सम्मेद शिखर पर, कुंड चौपड़ा रहा महान्।
मूलनायक श्री पार्श्वनाथ जी, चन्द्र बाहुबली हैं भगवान।।
आदिनाथ श्री महावीर जिन, की प्रतिमाएँ मंगलकार।
प्रभु चरणों में अर्घ्य चढ़ाते, विशद भाव से बारंबार।।

ॐ ह्रीं चौपड़ा कुण्ड विराजित श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीस तीर्थंकरों के गणधरों की कूट का अर्घ्य

मुख्य गणी चौबिस जिनवर के भाई रे!।
महावीर के गणनायक भी भाई रे!।।
मोक्ष महापदवी को पाए भाई रे!।
अर्घ्य चढ़ाकर पूज रहे हम भाई रे!।।1।

दोहा- चौबीसों जिनराज के, गणनायक हैं जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ ,शिखर सम्मेद यजेह।।1।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी आदि गणधर देवग्राम उद्यान से आदि भिन्न-भिन्न, स्थानों से निर्वाण पधारे हैं तिनके चरणारविन्द को मेरा मन-वचन-काय से अत्यन्त भक्ति भाव से नमस्कार हो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुन्थुनाथ जी की टोंक (ज्ञानधर कूट)

कूट ज्ञानधर से कुंथू जिन भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।2।।
कुंथुनाथ जिनराज का, ज्ञानधर कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ ,शिखर सम्मेद यजेह।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित ज्ञानधरकूट से श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकरादि 96कोड़ाकोड़ी 96 करोड़ 32 लाख, 96 हजार 742 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ज्ञानधर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री नमिनाथ जी की टोंक (मित्रधर कूट)

कूट मित्रधर से नमि जिनवर भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।3।।

नमिनाथ जिनराज का, मित्रधर कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित श्री नमिनाथ तीर्थंकरादि 9कोड़ाकोड़ी 1अरब 45 लाख 7 हजार 942 मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मित्रधर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री अरहनाथ जी की टोंक (नाटक कूट)

नाटक कूट से अरहनाथ जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।4।।
अरहनाथ जिनराज का, नाटक कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित नाटक कूट से श्री अरहनाथ तीर्थंकरादि 99करोड़ 99 लाख 99 हजार 999 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नाटक कूट के दर्शन का फल छियानवे करोड़ उपवास।)

श्री मल्लिनाथ जी की टोंक (संबल कूट)

संबल कूट से मल्लिनाथ जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।5।।
मल्लिनाथ जिनराज का, संबल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित संबलकूट से श्री मल्लिनाथ तीर्थंकरादि 99 करोड़ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(संबल कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री श्रेयनाथ जी की टोंक (संकुल कूट)

संकुल कूट से श्रेयनाथ जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिने भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।6।।
श्रेयनाथ जिनराज का, संकुल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित संकुलकूट से श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकरादि 96 कोड़ाकोड़ी 96 करोड़ 96 लाख 9 हजार 542 मुनि मोक्ष पध ारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(संकुल कूट के दर्शन का फल एक करोड़ प्रोषध उपवास।)

श्री पुष्पदंत जी की टोंक (सुप्रभ कूट)

सुप्रभ कूट से पुष्पदंत जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।7।।
पुष्पदंत जिनराज का, सुप्रभ कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुप्रभकूट से श्री पुष्पदंत तीर्थंकरादि 1 कोड़ाकोड़ी 99 लाख 7 हजार 480 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री पद्मप्रभ जी की टोंक (मोहन कूट)

मोहन कूट से पद्मप्रभ जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।8।।

पद्मप्रभ जिनराज का, संबल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित मोहनकूट से श्री पदमप्रभु तीर्थंकरादि 99 कोड़ाकोड़ी 87 लाख 43 हजार 727 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मोहन कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री मुनिसुव्रतनाथ जी की टोंक (निर्जर कूट)

निर्जर कूट से मुनिसुव्रत जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।9।।
मुनिसुव्रत जिनराज का, निर्जर कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित निर्जरकूट से श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकरादि 99कोड़ाकोड़ी 9 करोड़ 99 लाख 999 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(निर्जर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री चन्द्रप्रभ जी की टोंक (ललित कूट)

ललित कूट से चन्द्रप्रभ जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।10।।
चन्द्रप्रभ जिनराज का, ललित कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।10।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित ललितकूट से श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकरादि 9सौ 84 अरब 72 करोड़ 80 लाख 84 हजार 595 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ललित कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री आदिनाथ जी की टोंक

गिरि कैलाश से आदिनाथ जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।11।।
आदिनाथ जिनराज का, गरि कैलाश से जोय।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।11।।

ॐ ह्रीं श्री कैलाश सिद्धक्षेत्र स्थित कूट से माघ सुदी चौदस को श्री आदिनाथ तीर्थंकरादि10 हजार मुनि सहित मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतलनाथ जी की टोंक (विद्युत कूट)

विद्युत कूट से शीतलनाथ जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।12।।
शीतलनाथ जिनराज का, विद्युत कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।12।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित विद्युतकूट से श्री शीतलनाथ तीर्थंकरादि 18 कोड़ाकोड़ी 42 करोड़ 32 लाख 42 हजार 905 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विद्युतवर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री अनंतनाथ जी की टोंक (स्वयंप्रभ कूट)

कूट स्वयंभू से अनंत जिन भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।13।।

अनंतनाथ जिनराज का, कूट स्वयंप्रभ जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।13।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित स्वयंप्रभकूट से श्री अनन्तनाथ तीर्थंकरादि 96 कोड़ाकोड़ी 70 करोड़ 70 लाख 70 हजार 700 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(स्वयंप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री संभवनाथ जी की टोंक (धवल कूट)

धवल कूट से श्री संभव जिन भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।14।।
संभवनाथ जिनराज का, धवल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।14।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित धवलकूट से श्री सम्भवनाथ तीर्थंकरादि 9 कोड़ाकोड़ी 72 लाख 42 हजार 500 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(धवल कूट के दर्शन का फल ब्यालीस लाख उपवास।)

श्री वासुपूज्य भगवान की टोंक

चंपापुर से वासुपूज्य जिन भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।15।।
वासुपूज्य जिन सिद्ध भये, चंपापुर से जेह।
मन वच तन से पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।15।।

ॐ ह्रीं श्री चम्पापुर सिद्धक्षेत्र से भादवा सुदी चौदस को श्री वासुपूज्य तीर्थंकरादि मंदारगिरि से 1हजार मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अभिनंदननाथ जी की टोंक (आनंद कूट)

आनंद कूट से अभिनंदन जिन भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।16।।
अभिनंदननाथ जिनराज का, आनंद कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।16।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित आनंदकूट से श्री अभिनन्दन तीर्थंकरादि 72 कोड़ाकोड़ी 72 करोड़ 72 लाख 42 हजार 700 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(आनन्द कूट के दर्शन का फल एक लाख उपवास।)

श्री धर्मनाथजी की टोंक (सुदत्तवर कूट)

कूट सुदत्त से धर्मनाथ जिन भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।17।।
धर्मनाथ जिनराज का, सुदत्तवर कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।17।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुदत्तवरकूट से श्री धर्मनाथ तीर्थंकरादि 29 कोड़ाकोड़ी 19 करोड़ 9 लाख 9 हजार 795 मुनि मोक्ष पध ारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुदत्तवर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री सुमतिनाथ जी की टोंक (अविचल कूट)

अविचल कूट से सुमतिनाथ जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।18।।

सुमतिनाथ जिनराज का, अविचल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।18।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित अविचलकूट से श्री सुमतिनाथ तीर्थंकरादि 1 कोड़ाकोड़ी 84 करोड़ 72 लाख 81 हजार 700 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अविचल कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री शांतिनाथ जी की टोंक (कुंदप्रभ कूट)

कूट कुंदप्रभ से शांती जिन भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।19।।

शांतिनाथ जिनराज का, कुंदप्रभ कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।19।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित कुन्दप्रभकूट से श्री शांतिनाथ तीर्थंकरादि 9 कोड़ाकोड़ी 9 लाख 9 हजार 999 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(कुन्दप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री महावीर भगवान की टोंक

पावापुर से महावीर जिन भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।20।।
महावीर जिनराज का, पावापुर से जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ ,शिखर सम्मेद यजेह।।20।।

ॐ ह्रीं श्री पावापुर सिद्धक्षेत्र से कार्तिक वदी अमावस को श्री वर्द्धमान तीर्थंकरादि 26 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्वनाथ जी की टोंक (प्रभाष कूट)

प्रभास कूट से जिन सुपार्श्व जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।21।।
सुपार्श्वनाथ जिनराज का, प्रभाष कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।21।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित प्रभासकूट से श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकरादि 49 कोड़ाकोड़ी 84 करोड़ 72 लाख 7 हजार 742 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(प्रभास कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री विमलनाथ जी की टोंक (सुवीर कूट)

कूट सुवीर से विमलनाथ जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।22।।
विमलनाथ जिनराज का, सुवीर कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।21।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुवीरकूट से श्री विमलनाथ तीर्थंकरादि 70 कोड़ाकोड़ी 60 लाख 6 हजार 742 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुवीर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री अजितनाथ जी की टोंक (सिद्धवर कूट)

कूट सिद्धवर अजितनाथ जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।23।।

अजितनाथ जिनराज का, कूट सिद्धवर जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।21।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सिद्धवरकूट से श्री अजितनाथ तीर्थंकरादि 1 अरब 80 करोड़ 54 लाख मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सिद्धवर कूट के दर्शन का फल बत्तीस करोड़ उपवास।)

श्री नेमिनाथ भगवान की टोंक

गिरि गिरनार से नेमिनाथ जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।24।।
नेमिनाथ जिनराज जी, गिरिनार से जोय।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।21।।

ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित कूट से आषाढ़ सुदी साते को श्री नेमिनाथ तीर्थंकरादि शंबू प्रद्युत्न आदि 72 करोड़ 700 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(स्वर्णभद्र कूट) श्री पारसनाथ जी की टोंक

स्वर्ण कूट से पारसनाथ जिन भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।25।।
पारसनाथ जिनराज का, सुवर्णभद्र कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।21।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित स्वर्णभद्रकूट से श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकरादि ब्यासी करोड़ चौरासी लाख पैंतालीस हजार सात सौ ब्यालिस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(स्वर्णभद्र कूट के दर्शन का फल सोलह करोड़ उपवास।)

सम्मेद शिखर जी का पूर्ण अर्घ्य

ऋषी अनंतानंत यहाँ से भाई रे!।
मुक्ती पाकर सिद्ध हुए हैं भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।26।।
तीर्थराज सम्मेद पर, अनुपम कूट हैं जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।21।।

ॐ ह्रीं तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सम्मेद शिखर जी पूजन (संस्कृत)

स्थापना

मालनी छंद

अतुल सुख निधानं, सर्व कल्याण बीजम्।
जनन जलधि पोतं, भव्य सत्वेक पात्रम्।।
दुरित तरु कुठारं, सर्व तीर्थ प्रधानम्।
सम्मेद शिखर पूज्यं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतम्।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधि करणं।पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

उपजाति छंद

गंगादि तोयैः स्नपयन्ति देवा,यांस्तान्- गिरीशं अनादि सिद्धान्।
यजामि नीरादि भवैर्जलोघैः, नमामि सम्मेद गिरीन्द्र भक्त्या।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखराय जन्म,जरा,मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

समर्पितैर्-दिव्य सुगंध द्रव्यै, येषां प्रकुर्वन्त्यगराश्च-तेषाम्।
कुर्वेह मंगे वरचंदनाद्यै, नमामि सम्मेद गिरीन्द्र भक्त्या।। 2।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य जन्म, जरा,मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

रत्नत्रयी-रक्षत पुण्य पुंजै, या प्रार्चिता देव! गणै जिनार्चा।
तां शालि जातैर्-विमलैर्-यजैऽहं , नमामि सम्मेद गिरीन्द्र भक्त्या।। 3।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य अक्षयपद प्राप्ते अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

विनम्र भव्याब्ज विबोध सूर्यान्, एवामरेन्द्रः सुर वृक्ष पुष्पैः।
तान्यर्चयेऽहं वर चंपकाद्यै, नमामि सम्मेद गिरीन्द्र भक्त्या।। 4।।

ॐ ह्रीं श्रीतीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सुधा स्वरूपैश् -चरुभि सुरेशैः, प्राज्याज्य सारैश्- चरुभि रसाढ्यै।
तां पूजयेऽहं शुभ मोदकाद्यैः, नमामि सम्मेद गिरीन्दद्र भक्त्या।। 5।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीपैः कनत्कांचन भाजनस्थै, घृतादि कर्पूर भवैः प्रदीपैः।
निर्वाण क्षेत्रं विदधामि तेषां, नमामि सम्मेद गिरीन्द्र भक्त्या।। 6।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

स्-वर्गोदभवैश्चरु घटस्थ धूपैर्, यान् देवदेवैर्-महितान् सुतीर्थान्।
तान् संयजे दिव्य सुगंध धूपैः, नमामि सम्मेद गिरीन्द्र भक्त्या।। 7।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फलैः सुकल्पद्रुमजैः सुरेन्द्रैः, याचर्चिता सत्कृतिभिर्- महेशान्।
तान् मोच चोचादि चयैर्-यजेऽहं , नमामि सम्मेद गिरीन्द्र भक्त्या।। 8।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य मोक्ष पद प्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

सन्नीर गंधाक्षत पुष्प जातैर्-नैवेद्य दीपामल धूप शुभ्रैः।
फलैर्-विचित्रैर्-घन पुण्य योगात्, नमामि सम्मेद गिरीन्द्र भक्त्या।।9।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अनुष्टुप छंद

नमस्कृत्य सर्वान् सिद्धान् ,तीर्थ स्थान जिनेशिनाम्।
सम्मेद गिरीन्द्र पूज्यं, भक्त्या स्तौमि त्रियोगताः।।
असंख्ययोगिनश् एवं ,विंश तीर्थंकरस्-तथा।
कूटेषु विंशतौ मुक्त्यौ, पूज्यं सर्वान्-नमाम्यहं।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अर्घ्यावली

गणधर कूट का अर्घ्य

गणधरे कूटे मुख्यः, सकल ज्ञान संयुतैः।
भव पाशच्छिदेऽहं तान्, तत्कूटे च स्तुवे मुदा।।
नृदेव मुनिभिर्-वंद्या , एते सर्वे शिवं ययुः।
विशद तान् च संस्तौमि , दुर्गतिच्छित्तये सह।।1।।

ॐ ह्रीं श्री गणधरकूटे विभिन्न स्थाने मोक्ष प्राप्ते गणधरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानधर कूट (श्री कुंथुनाथ जी की टोंक)

कूटे ज्ञानधरे देव, कुंथुनाथो सुरैर्-नुतः।
शांत्यैशी संस्तुवे नित्यं, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।2।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र स्थित ज्ञानधरकूटे षड् नवति कोटाकोटि षड् नवति कोटि द्विचत्वारिंशत् मुनि सहिताय श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ज्ञानधर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

मित्रधर कूट (श्री नमीनाथ जी की टोंक)

कूटे मित्रधरे पूज्यो, नमीनाथः बुधैर्-नुतः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित पंच चत्वारिंशत् लक्ष सप्त सहस्र नव शत द्विचत्वारिंशत् मुनि सहिताय श्री नमिनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मित्रधर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

नाटक कूट (श्री अरहनाथ जी की टोंक)

नाटक कूटतः स्वामिन्, नरनाथो महर्षिभिः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।4।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित नाटक कूटे नव नवति कोटाकोटि नव लक्ष नव नवति सहस्र नव शत नव नवति मुनि सहिताय श्री अरहनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नाटक कूट के दर्शन का फल छियानवे करोड़ उपवास।)

संबल कूट (श्री मल्लिनाथ जी की टोंक)

संबल कूटतः मल्ली-नाथ संयम धारकाः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।5।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र स्थित संबलकूटे षड् नवति कोटि मुनि सहिताय श्री मल्लिनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(संबल कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

संकुल कूट (श्री श्रेयनाथ जी की टोंक)

संकुल कूटतः अर्हन्, श्रेयनाथ शिवं गतः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।6।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित संकुलकूटे षड् नवति कोटाकोटि षड्नवति कोटि षड्नवति लक्ष नव सहस्र पंच शत् द्विचत्वारिंशत् मुनि सहिताय श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(संकुल कूट के दर्शन का फल एक करोड़ प्रोषध उपवास।)

सुप्रभ कूट (श्री पुष्पदंत जी की टोंक)

सुप्रभः कूटतः देव, पुष्पदंतौ शिवं गतः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।7।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुप्रभकूटे एक कोटाकोटि नवनवति लक्ष सप्तसहस्र सप्तशत् अशीति मुनि सहिताय श्री पुष्पदंत तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

मोहन कूट (श्री पद्मप्रभ जी की टोंक)

मोहन कूटतः श्री मत्, पद्मप्रभ शिवं गतः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।8।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र स्थित मोहनकूटे नव नवति कोटि मुनि सहिताय श्री पद्मप्रभ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मोहन कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

निर्जर कूट (श्री मुनिसुव्रतनाथ जी की टोंक)

निर्जर कूटतः स्वामिन्-सुव्रतः सुव्रतप्रदाः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।9।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र स्थित निर्जरकूटे श्री नव नवति कोटाकोटी नवनवति कोटी नवनवति लक्ष नवशत् नवनवति मुनि सहिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(निर्जर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

ललित कूट (श्री चन्द्रप्रभ जी की टोंक)

ललित कूटतः चन्द्र-प्रभो! मोहाद्विषो जयी।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।10।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित ललितकूटे नव शत् चतुरशीति अर्वुद द्विसप्तति कोटि अशीति लक्ष चतुरशीति सहस्र पंचशत् पंच पंचाशत् मुनि सहिताय श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकरादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ललित कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

अष्टापद (श्री आदिनाथ जी की टोंक)

कैलाश गिरितः स्वामी, आदिनाथो शिवं गतः।
दस सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।11।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित कैलाश पर्वत सिद्धक्षेत्रे दश सहस्र मुनि सहिताय श्री आदिनाथ तीर्थंकरादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युतवर कूट (श्री शीतलनाथ जी की टोंक)

विद्युतवर कूटतः , श्री शीतल सिद्धिश्रितः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।12।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित विद्युतवर कूटे अष्टादश कोटाकोटि द्विचत्त्वारिंशिद् कोटी द्वात्रिंशत लक्ष द्वि चत्वारिंशत् सहस्र नवशत् पंच मुनि सहिताय श्री शीतलनाथ तीर्थंकरादिं जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विद्युतवर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

स्वयंप्रभ कूट (श्री अनंतनाथ जी की टोंक)

कूटे स्वयंप्रभानन्त - नाथोऽनंतास्पदं तथा।
षट् सहस मुनिन्द्रेक युक्, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।13।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित स्वयंप्रभकूटे षड् नवति कोटाकोटि सप्ततिकोटी सप्ततिलक्ष सप्तति सहस्र सप्तशत् पंच मुनि सहिताय श्री अनंतनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(स्वयंप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

धबल कूट (श्री संभवनाथ जी की टोंक)

धबल कूटतः अर्हन्, सम्भवो कर्म हानिता।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।14।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित धबलकूटे नव कोटाकोटी द्वादशलक्ष द्विचत्वारिंशत् पंच शत् मुनि सहिताय श्री संभवनाथ तीर्थंकरादि जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(धवल कूट के दर्शन का फल ब्यालीस लाख उपवास।)

(चंपापुर) श्री वासुपूज्य जी की टोंक

मंदार शैल राजे श्री, वासुपूज्यः शिवं गतः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।15।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत चंपापुर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित एक सहस्र मुनि सहिताय श्री वासुपूज्य तीर्थंकरादि जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनंद कूट (श्री अभिनंदननाथ जी की टोंक)

आनंद कूटतः देव - रभिनंदन तीर्थकृत्।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।16।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित आनंदकूटे द्वा सप्तति कोटाकोटी द्विसप्तति लक्ष द्विचत्वारिंशत् सहस्र सप्त शत् मुनि सहिताय श्री अभिनंदननाथ तीर्थंकरादि जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(आनन्द कूट के दर्शन का फल एक लाख उपवास।)

सुदत्तवर कूट (श्री धर्मनाथ जी की टोंक)

सुदत्त कूटतः धर्म-नाथो, धर्मेक चक्रयुत्।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।17।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुदत्तकूटे एकोनत्रिंशत कोटाकोटी एकोनविंशति कोटी नवति सहस्र सप्तशत् पंचनवति मुनि सहिताय श्री धर्मनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुदत्तवर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

अविचल कूट (श्री सुमतिनाथ जी की टोंक)

अविचल कूटे श्रीमत्, सुमतिः सन्मति प्रदः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।18।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित अविचलकूटे एक कोटाकोटी चतुरशीति कोटी द्विसप्तति लक्ष एकाशीति सहस्र सप्तशत्(एकाशीति)मुनि सहिताय श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अविचल कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

कुंदप्रभ कूट (श्री शांतिनाथ जी की टोंक)

कूटे कुंदप्रभः शांती, जिनो स्मर पाशभित्।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।19।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित कुंदप्रभकूटे नव कोटाकोटी नवलक्ष नवसहस्र नवशत् नवनवति मुनि सहिताय श्रीशांतिनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(कुन्दप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

पावापुर (श्री महावीर स्वामी जी का अर्घ्य)

सरोवरे पावापुर्याः, महावीरः शिवं गतः।
षड् विंशति मुनीन्द्राश्च, सिद्धिं सर्वान् नमामि तान्।। 20।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत पावापुर सिद्धक्षेत्र षड् विंशति मुनि सहिताय श्री महावीर तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभाष कूट (श्री सुपाश्र्वनाथ जी की टोंक)

प्रभाष कूटतः देवः, श्री सुपाश्र्व शिवं गतः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।21।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित प्रभासकूटे एकोनपंचाशत् कोटाकोटी चतुरशीति कोटी द्विसप्तति लक्ष सप्तसह्रस सप्तशत् द्विचत्वारिंशत् मुनि सहित श्री सुपाश्र्वनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(प्रभास कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

सुवीर कूट (श्री विमलनाथ जी की टोंक)

सुवीर कूटतः अर्हन् , विमलनाथ शिवं गतः ।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।22।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुवीरकूटे सप्तति कोटाकोटी षष्टिलक्ष नवस्रहस सप्तशत् द्विचत्वारिंशद् मुनि सहिताय श्री विमलनाथ तीर्थंकरादि जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(सुवीर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

सिद्धवर कूट (श्री अजितनाथ जी की टोंक)

कूटे सिद्धवर श्रीमान् , अजिते स्मर पाशभित्।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।23।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धवर कूटतः एक अर्वुद अशीति कोटि अष्ट पंचाशत् लक्ष मुनि सहिताय श्री अजितनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्व स्वाहा।

(सिद्धवर कूट के दर्शन का फल बत्तीस करोड़ उपवास।)

गिरनार (नेमिनाथ जी की टोंक)

गिरवरे ऊर्जयंते , नेमिनाथ बुधैर् - नुतः।
कोट्यो द्विसप्तति साधु , सप्त शत् शिवं गतः।।24।।

ॐ ह्रीं श्री गिरनार पर्वत सिद्धक्षेत्र द्विसप्तति कोटी सप्तशत् मुनि सहिताय श्री नेमिनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

स्वर्णभद्र कूट (श्री पारसनाथ जी की टोंक)

स्वर्णभद्र कूटे श्रीमत् , पाश्र्व नाथो शिवं गतः।
त्रिंशत मुनियुङ् मुक्ती, वधू लेभे नमामि तान्।।25।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत द्विअशीति कोटी चतुरशीति लक्ष पंच चत्वारिंशद् सहस्र सप्तशत् द्विचत्वारिंशद् मुनि सहिताय श्री पारसनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(स्वर्णभद्र कूट के दर्शन का फल सोलह करोड़ उपवास।)

जयमाल

अनाद्योऽनिधन - स्यास्य, महात्म्य केन वर्ण्यंते।
भव्या एव प्रवंद्यंते, नामव्यैर् - वर्धते कदा।।

तोटक छंद

सुर खेचर किन्नर देव-गमं, यत्रागत चरण मुनीन्द्ररणं।
नाना सुभगा सुमनं प्रसरं, वंदे गिरिराज -महं विशदं।।1।।
तरुभूषित पार्श्व युगं सलयं, निर्वाण भूमि अतिशय सुभगं।
जिनवर मंगल गुण गण निचयं,वंदे गिरिराज- महं विशदं।।2।।
अति भक्ति भाव भावित सुनगं, शंश्रित सुर नर कृत धन भोगं।
संभव भुव जल गुण शुभ प्रकरं, वंदे गिरिराज - महं विशदं।।3।।
मद खेद महीधर नाश पवि, भय भीम निशाचर चारु रवि।
गुणराजि विराजित भाव महं, वंदे गिरिराज - महं विशदं।।4।।
व्यतीत विकल्प समूहरणं, भुवि भस्मित कर्मांधनाग्नि गणं।
सुरराज नराधिप शेषनुतम्, वंदे गिरिराज -महं विशदं।।5।।

उपजाति छंद

अनंत सौख्यामृत कूप रूपं, त्रिलोक पूज्यं विशदं पवित्रं।
निर्वाण भू शाश्वत सर्वलोके, मुनीन्द्र वद्यं भव ताप मुक्तं।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुद्धोपयोग उपलब्ध मनंत सौख्य।
शुद्धात्म सार मुररी कृत-मात्म विद्धि।।
सन्मुक्ति संवरण - मदभुत - मादरेण।
सम्मेद शैल कुसुमांजलि नाधि नौमिं।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

श्री स्वर्ण भद्र कूट चालीसा

दोहा- शीश नवा श्री पार्श्व को, गणधर करूँ प्रणाम।
शाश्वत तीरथराज है, सिद्धों का शिव धाम।।
स्वर्णभद्र शुभ कूट का, चालीसा शुभकार।
चरण वंदना कर यहाँ, गाते बारंबार।।

चौपाई

मध्यलोक के मध्य में भाई, जंबूद्वीप रहा शुभदाई।।1।।
जिसके मध्य मेरु शुभ जानो, भरत क्षेत्र दक्षिण में मानो।।2।।
आर्य खंड जिसमें शुभकारी, भारत देश रहा मनहारी।।3।।
झारखंड शुभ प्रांत कहाए, जिला गिरीडीह जिसमें आए।। 4।।
श्री सम्मेद शिखर शुभकारी, जिसकी छटा रही मनहारी।। 5।।
जो निर्वाण क्षेत्र कहलाए, मुनिवर जहाँ पे ध्यान लगाए।। 6।।
किए तपस्या जो अतिशायी, कर्म निर्जरा जिससे पाई।।7।।
तीर्थंकर पदवी के धारी, हुए भूत में मंगलकारी।।8।।
अन्य मुनीश्वर पावन गाए, इसी क्षेत्र से शिव पद पाए।।9।।
इस कालिक चौबीसी जानो, ऋषभादिक तीर्थंकर मानो।।10।।
जिनमें बीस तीर्थंकर गाए, इसी क्षेत्र से शिव पद पाए।।11।।
हुण्डावसर्पिणी काल ये गाया, जिसकी है कुछ ऐसी माया।।12।।
आदिनाथ अष्टापद जानो, वासुपूज्य चंपापुर मानो।।13।।
नेमी जिन गिरनार कहाए, महावीर पावापुर पाए।।14।।
शेष जिनेश्वर शिव पद गामी, अन्य मुनीश्वर अंर्तयामी।।15।।
इसी तीर्थ से मोक्ष सिधाए, यह निर्वाण क्षेत्र कहलाए।।16।।
पार्श्व प्रभू उपसर्ग विजेता, हुए आप कर्मों के जेता।।17।।
नाग नागिनी जो कहलाए, महामंत्र प्रभु जिन्हें सुनाए।।18।।
धरणेन्द्र पद्मावति कहलाए, देव सुगति के सुख जो पाए।।19।।
प्रभु ने संयम को अपनाया, निज आतम का ध्यान लगाया।।20।।
कमठ घूमते वहाँ पे आया, देख प्रभु को बैर जगाया।।21।।
तब उपसर्ग कमठ ने ढाया, मर्म धर्म का जान न पाया।।23।।
देवों ने उपसर्ग हटाया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।।24।।
समवशरण तव देव बनाए, देव इन्द्र जयकार लगााए।।25।।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, श्रद्धा ज्ञान जीव कई पाए।।26।।

संयम जीवन में अपनाए, केवलज्ञान जीव प्रगटाए।।27।।
गणधर दश प्रभु के कहलाए, गणधर प्रथम स्वयंभू गाए।।28।।
श्री सम्मेदशिखर कहलाए, स्वर्णभद्र शुभ कूट कहाए।।29।।
कर बिहार प्रभु जहाँ पे आए, निज आतम का ध्यान लगाए।।30।।
योग निरोध किए जिन स्वामी, एक माह का अंर्तयामी।।32।।
श्रावण शुक्ल सप्तमी पाए, खड्गासन से मोक्ष सिधाए।।32।।
सुर नर पशु जिनके गुण गाते, भक्ति भाव से शीश झुकाते।।33।।
यात्री दूर दूर से आते, प्रभु की जय जयकार लगाते।।34।।
गाते हैं कई भजनावलियाँ, खिलती हैं जन मन की कलियाँ।।35।।
पूजा कोई विधान रचाते, आरती करके छत्र चढ़ाते।।36।।
मम् सौभाग्य उदय में आया, तीर्थराज का दर्शन पाया।।37।।
प्रभु की महिमा है अतिशायी, जीवों को हर सौख्य प्रदायी।।38।।
योग साधना करते योगी, स्वास्थ्य लाभ पाते हैं रोगी।।39।।
अज्ञानी सद्ज्ञान जगावें, भोगी भोग संपदा पावें।।40।।

दोहा- स्वर्णभद्र शुभ कूट का, चालीसा शुभकार।
सम्मेदशिखर शुभ तीर्थ की, महिमा अपरंपार।।
सुख शांती सौभाग्य हो, स्वजन होंय अनुकूल।
दीन दरिद्री जो विशद, पाएँ सिद्धिया मूल।।

जाप-ॐ ह्रीं तीर्थराज श्री सम्मेद शिखराय नमः।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती

पारसनाथ भगवान, आज थारी आरती उतारूँ।
आरती उतारूँ थारी मूरत निहारें, कर दो भव से पार....आज थारी

अश्वसेन के राजदुलारे, वामा की आँखों के तारे।
जन्में हैं काशीराज-आज थारी.......।।1।।

बाल ब्रह्मचारी हितकारी, विघ्न विनाशक मंगलकारी।
जैन धर्म के ताज आज थारी.......।।2।।

नाग युगल को मंत्र सुनाया, देवगति को क्षण में पाया।
किया प्रभू उपकार- आज थारी......।।3।।

दीन बन्धु हे! केवलज्ञानी, भव-दुःखहर्ता शिव सुख दानी।
करो जगत उद्धार- आज थारी.......।।4।।

"विशद" आरती लेकर आये, भक्ति भाव से शीश झुकाये।
जन-जन के सुखकार- आज थारी........।।5।

श्री सम्मेदशिखर चालीसा

दोहा– **शाश्वत तीरथराज है, शिखर सम्मेद महान्।**
चालीसा गाते यहाँ, पाने पद निर्वाण।।

(चौपाई)

शाश्वत तीर्थराज शुभकारी, गिरि सम्मेद शिखर मनहारी ।।1 ।।
कण कण पावन जिसका पाया, मुनियों ने जहाँ ध्यान लगाया ।।2 ।।
हर युग के तीर्थंकर आते, मुक्तिवधू को यहाँ से पाते ।।3 ।।
कालदोष के कारण जानो, इस युग का अन्तर पहिचानो ।।4 ।।
बीस जिनेश्वर यहाँ पे आए, गिरि सम्मेद से मुक्ती पाए ।।5 ।।
इन्द्रराज स्वर्गों से आए, रत्न कांकिणी साथ में लाए ।।6 ।।
चरण उकेरे जिन के भाई, जिनकी महिमा है सुखदायी ।।7 ।।
प्रथम टोंक गणधर की जानो, चौबिस चरण बने शुभ मानो ।।8 ।।
द्वितिय कूट ज्ञानधर भाई, कुन्थुनाथ जिनवर की गाई ।।9 ।।
कूट मित्रधर नमि जिन पाए, कर्म नाश कर मोक्ष सिधाए ।।10 ।।
नाटककूट रही मनहारी, अरहनाथ की मंगलकारी ।।11 ।।
संबलकूट की महिमा गाते, मल्लिनाथ जहाँ पूजे जाते ।।12 ।।
संकुल कूट श्रेष्ठ कहलाए, श्री श्रेयांस मुक्ती पद पाए ।।13 ।।
सुप्रभ कूट की महिमा न्यारी, पुष्पदंत जिन की मनहारी ।।14 ।।
मोहन कूट पद्म प्रभु पाए, जन-जन के मन को जो भाए ।।15 ।।
पूज्य कूट निर्जर फिर आए, मुनिसुव्रत जी शिवपद पाए ।।16 ।।
ललितकूट चन्द्रप्रभु स्वामी, हुए यहाँ से अन्तर्यामी ।।17 ।।
विद्युतवर है कूट निराली, शीतल जिन की महिमा शाली ।।18 ।।
कूट स्वयंप्रभ आगे आए, जिन अनन्त की महिमा गाए ।।19 ।।
धवलकूट फिर आगे जानो, संभव जिन की जो पहिचानो ।।20 ।।
आनन्द कूट पे बन्दर आते, अभिनन्दन जिन के गुण गाते ।।21 ।।

कूट सुदत्त श्रेष्ठ शुभ गाते, धर्मनाथ जिन पूजे जाते ।।22 ।।
अविचल कूट पे प्राणी जाते, सुमतिनाथ पद पूज रचाते ।।23 ।।
कुन्दकूट पर प्राणी सारे, शान्तिनाथ पद चिह्न पखारे ।।24 ।।
कूट प्रभास है महिमा शाली, जिन सुपार्श्व पद चिह्नों वाली ।।25 ।।
कूट सुवीर पे जो भी जाए, विमलनाथ पद दर्शन पाए ।।26 ।।
सिद्धकूट पर सुर–नर आते, अजितनाथ पद शीश झुकाते ।।27 ।।
कूट स्वर्णप्रभ मंगलकारी, पार्श्वप्रभु का है मनहारी ।।28 ।।
दूर–दूर से श्रावक आते, शुद्ध भाव से महिमा गाते ।।29 ।।
नंगे पैरों चढ़ते जाते, प्रभु के पद में ध्यान लगाते ।।30 ।।
भाँति–भाँति की भजनावलियाँ, वीतराग भावों की कलियाँ ।।31 ।।
पुण्यवान ही दर्शन पावें, नरक पशू गति बंध नशावें ।।32 ।।
तीर्थ वन्दना करने जावें, कर्मों के बन्धन कट जावें ।।33 ।।
भूले को भी राह दिखावें, दुखियों के सब दुःख मिटावें ।।34 ।।
कभी स्वान बन कर आ जाते, डोली वाले बनकर आते ।।35 ।।
गिरि की महिमा यह जग गाए, सूर्य चाँद महिमा दिखलाए ।।36 ।।
सन्त मुनि अर्हन्त निराले, शिव पदवी को पाने वाले ।।37 ।।
तुमरी धूल लगाकर माथें, भाव सहित तव गाथा गाते ।।38 ।।
हमको मुक्ती मार्ग दिखाओ, जन्म मरण से मुक्ति दिलाओ ।।39 ।।
सेवक बनकर के हम आए, पद में सादर शीश झुकाए ।।40 ।।

दोहा– 'विशद' भाव से जो पढ़े, चालीसा चालीस ।
सुख–शांती पावे अतुल, बने श्री का ईश ।।
महिमा शिखर सम्मेद की, गाएँ मंगलकार ।
उसी तीर्थ से ही स्वयं, पावे मुक्ती द्वार ।।

जाप– (1) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः । (2) ॐ ह्रीं श्री अनंतानंत तीर्थंकर निर्वाण भूमि सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः ।

श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र तीर्थ वंदना

श्री सम्मेदशिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
इस धरती अंबर की जय हो, शाश्वत तीर्थ क्षेत्र की जय हो॥

दोहा- शाश्वत तीर्थ महान्, पूज्य रहा इस लोक में।
करते चरण प्रणाम, हुए सिद्ध जो भी विशद॥

तर्ज- यह देश है वीर जवानों का———

यह तीर्थ है जिन अर्हंतों का, जो मोक्ष पधारे सिद्धों का ।
जय जय जय हो........॥
यह तीर्थ है गुरू निर्ग्रन्थों का, जिन परमेष्ठी भगवंतों का ।
जय जय जय हो,,,,,,॥

गणधर कूट की जय बोलें, जिन की भक्ति में डोलें ।
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-------॥1॥

यहाँ कूट ज्ञानधर है भाई, श्री कुंथुनाथ का शिवदायी ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ॥
यहाँ नमीनाथ जी शिव पाए, यह कूट मित्रधर कहलाए ।
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो–॥2॥

यहाँ नाटक कूट शुभ कहलाए, श्री अरहनाथ शिवपद पाए ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ।
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-॥3॥

यहाँ संकुल कूट है मनहारी, श्रेयांसनाथ का शिवकारी ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ॥
यहाँ पुष्पदंत जिनवर आए, जो सुप्रभ कूट से शिव पाए ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-॥4॥

यहाँ मोहन कूट मुक्तीदायी, श्री पद्म प्रभु जी का भाई ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-॥4॥

यहाँ निर्जर कूट भी कहलाए, श्री मुनिसुव्रत जी शिव पाए ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-------॥
है ललित कूट मंगलकारी, श्री चन्द्रप्रभु का शिवकारी ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-॥5॥

श्री आदिनाथ जी कहलाए, जो अष्टापद से शिव पाए ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ॥
जय हो - जय हो - जय हो - जय हो - जय हो - ॥6॥

यहाँ कूट स्वयंभू कहलाए, श्री जिनानंत जी शिव पद पाए ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ॥
जय हो - जय हो - जय हो - जय हो - जय हो - ॥7॥

यहाँ विद्युत कूट भी है भाई, श्री शीतलनाथ का शिवदाई ।
है धबल कूट शुभ धबल यहाँ, श्री संभव जिन शिव पाएँ जहाँ ॥
जय हो - जय हो - जय हो - जय हो - जय हो - ॥8॥

श्री वासुपूज्य जी कहलाए, जो चंपापुर से शिव पाए ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ।
जय हो - जय हो - जय हो - जय हो - जय हो - ॥9॥

श्री अभिनंदन जिनराज कहे, जो आनंद कूट से मोक्ष गये ।
प्रभु धर्मनाथ जी कहलाए ,जो सुदत्तकूट से शिव पाए ॥
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ।
जय हो - जय हो - जय हो - जय हो - जय हो - ॥10॥

श्री सुमतिनाथ जी कहलाए, जो अविचल कूट से शिव पाए।
श्री कूट कुंदप्रभ फिर आए, श्री शांतिनाथ मुक्ती पाए ॥
जय हो - जय हो - जय हो - जय हो - जय हो - ॥11॥

श्री पावापुर जी कहलाए, श्री वीर प्रभु शिव पद पाए ।
शुभ कूट प्रभाष कहा जाए, जिनवर सुपार्श्व शिव पद पाए ॥12॥

श्री विमलनाथ जिनवर स्वामी, हुए कूट सुवीर से शिवगामी।
फिर कूट सिद्धवर जी आए, श्री अजितनाथ शिवपद पाए ।
जय हो - जय हो - जय हो - जय हो - जय हो - ॥13॥

श्री नेमिनाथ जी कर्म क्षये, गिरि उर्जयंत से मोक्ष गये ।
है स्वर्णभद्र शुभकर भाई, श्री पार्श्वनाथ का शिवदायी।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ।
जय हो - जय हो - जय हो - जय हो - जय हो - ॥

दोहा- तीर्थराज की वंदना, होके भाव विभोर ।
करे भाव से जो 'विशद', बढ़े मोक्ष की ओर ॥

।। लघु ।। निर्वाण काण्ड

।।सोरठा।।

पावन भू निर्वाण ,पूज्य कही इस लोक में।
पाने शिव सोपान, विशद पूजते जगत जन ।।

।।चाल-छन्द।।

जिन आदीश्वर कहलाए, अष्टापद से शिव पाए ।
चम्पापुर धाम बनाए, प्रभु वासुपूज्य कहलाए ।।1।।
श्री नेमिनाथ गिरनारी, से हुए आप शिवकारी ।
श्री वीर प्रभू शिव पाए, पावापुर धन्य बनाए।।2।।
जिन बीस मोक्ष पद पाए, सम्मेद शिखर कहलाए।
निर्वाण क्षेत्र जो गाए, वे जगत पूज्य कहलाए।।3।।
मुनि नगर तारवर आए, वरदत्तादि शिव पाए।
शम्बू प्रद्युम्न सब भाई, गिरनार से मुक्ती पाई।।4।।
लवकुश आदिक जो गाए, पावागिर से शिव पाए।
त्रय पाण्डव आदिक जानो, शिव शत्रुंजय से मानो।।5।।
बलभद्र आदि शिव पाए, गजपंथ से मोक्ष सिधाए।
हनू राम नीलादिक सारे, तुंगी से मोक्ष सिधारे।। 6।।
नंगादि पंच कहाए, सोनागिर से शिव पाए।
रावण सुत आदि कुमारा, रेवातट से शिव धारा।। 7।।
फिर कूट सिद्धवर आए, चक्रीद्वय शिव पद पाए।
कुम्भ इन्द्र कर्ण जित मानो, शिव बड़वानी से जानो।।8।।
मुनि स्वर्ण भद्रादि कहाए, पावागिर से शिव पाए।
गुरुदत्तादिक मुनि सारे, द्रोणागिर से शिव धारे।।9।।
बालादिक नाग कुमारा, अष्टापद से शिव धारा।
मुनि साढ़े तीन करोड़ी, मेढ़ागिर से शिव जोड़ी ।।10।।
कुलभूषण आदि मुनीशा,शिव कुन्थलगिरि के शीशा।
जसरथ सुत कलिंग कहाए, शिव कोटि शिला से पाए।।11।।
वरदत्तादिक पंच ऋशीषा, रैशिन्दगिर के शीशा।
मथुरा उद्यान कहाए, जम्बू स्वामी शिव पाए।।12।।
निर्वाण जहां जिन पाए, निर्वाण क्षेत्र कहलाए।
त्रय लोक में तीर्थ जो सारे, वे हैं सब पूज्य हमारे ।।13।।
हम श्री जिन महिमा गाते, निर्वाण क्षेत्र सब ध्याते ।
यह 'विशद' भावना भाएं, हम भी शिव पद को पाएं।।14।।
सोरठा - पाए पद निर्वाण, संयम के धारी ऋषी।
हो जाए कल्याण, महिमा गाते हम 'विशद'।।

राह दिखाये मोक्ष की ,तारण तरण जहाज।
तीन योग से पूजते, श्री जिन पद हम आज।।

• • • • • • • • • • • • •

जिनेन्द्र स्तुति

सदानंददानं गुणानां निधानं, विधानं सुधर्मासु सं मुक्तमानं।।
कृतानेकगीर्वाणसत्कीर्तिगानं, जिनाधीश्वरं नौमि लक्ष्मीनिधानं।।1।।
सुशांतं सुकांतं सदाचाररूपं, सुशीलं सुलीलं सदानम्रभूपं।।
सुबोधं विरोधातिगं दिव्यमानं, जिनाधीश्वरं नौमि लक्ष्मीनिधानं।।2।।
विरोषं विदोषं सदा मुक्तभोगं, वियोगं सुयोगं तरां त्यक्तरोगं।।
गुणैर्-मंडितं पंडितानंददानं, जिनाधीश्वरं नौमि लक्ष्मीनिधानं।।3।।
विमुक्तं सुमुक्तं समासक्तचित्तं, मुमुक्षुव्रजैर्वंदितं चिन्निमित्तं।।
सदा सेवितं देवदेवै-रमानं, जिनाधीश्वरं नौमि लक्ष्मीनिधानं।।5।।
विगर्वं विखर्वं सुसर्वप्रकाशं, विवर्णं विगंधं कृताघप्रणाशं।।
सदा सेवितं भव्यलोकैकमानं, जिनाधीश्वरं नौमि लक्ष्मीनिधानं।।6।।
विगात्रं सुपात्रं कुमिथ्यात्वदात्रं, लसत्पद्म नेत्रं पवित्रं विचित्रं।।
सुपूर्णेंदुवक्त्रं सु समक्षीरपानं, जिनाधीश्वरं नौमि लक्ष्मीनिधानं।।7।।
विलोभं विशोभं विदंभं विदारं, विमारं विकारातिगं त्यक्तहारं।।
हरं शंकरं ब्रह्मरूपं हरीशं, जिनाधीश्वरं नौमि लक्ष्मीनिधानं।।8।।
सुवीरं सुधीरं भवप्राप्तितीरं, गताशं विनाशं कुदुःखाग्निनीरं।।
सुमूर्तिं सुकीर्तिं जगप्राप्तमानं, जिनाधीश्वरं नौमि लक्ष्मीनिधानं।।9।।

मंगल पाठ

मंगलं श्री जिनो देवो, ध्यानं कृत सु पञ्चमं।
अमंगलं सर्वदा हारीं, श्री जैनेन्द्र सुमंगलम्।।1।।
मंगलं जिन अर्हन्तं, मंगलं जिन सिद्धिदः।
मंगलं सुपूज्याचार्यां, मंगलं पाठकः गुरु।।2।।
मंगलं सर्व साधूभ्यः, मंगलं श्री जैनागमः।
मंगलं जिनबिंबः स्यात्, चैत्यालयः सुमंगलं।।3।।
अहिंसा परमोधर्माः, सर्व मंगल दायकः।
उत्तम क्षमादि धर्मः, जैन धर्मोस्तु मंगलं।।4।।
असत कर्म नाशीं च, सर्व सौख्य प्रदायकः।
'विशद' रत्नत्रयी धर्मः, परम् मंगलदायकः।।5।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपामि।।

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर.. ।।1।।
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4मुनिवर..।।2।।
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर ..।।3।।
धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर ..।।4।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

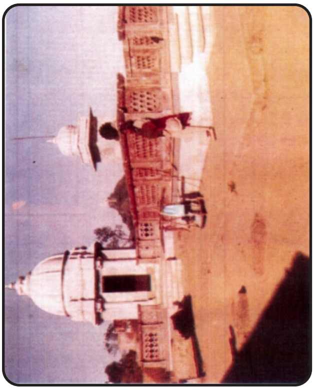

श्री गौतम भगवान

श्री कुन्थूनाथ भगवान–''ज्ञानधर कूट''

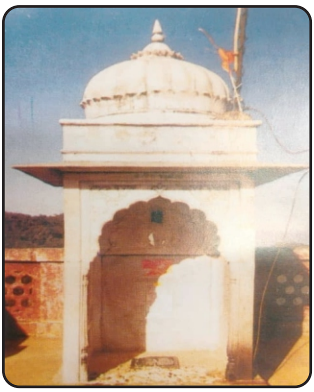

श्री नमिनाथ भगवान–''मित्रधर कूट''

श्री अरहनाथ भगवान–''नाटक कूट''

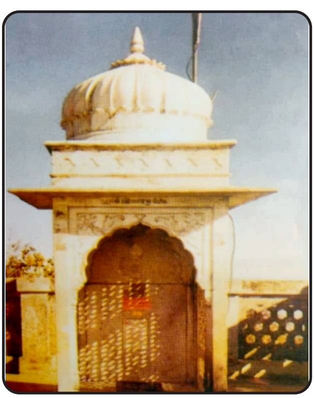

श्री मल्लिनाथ भगवान–''सम्बल कूट''

श्री श्रेयांसनाथ भगवान–''संकुल कूट''

श्री पुष्पदन्त भगवान–''सुप्रभ कूट''

श्री पद्मप्रभ भगवान–''मोहन कूट''

श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान–''निर्जर कूट''

श्री चन्द्रप्रभ भगवान–''ललित कूट''

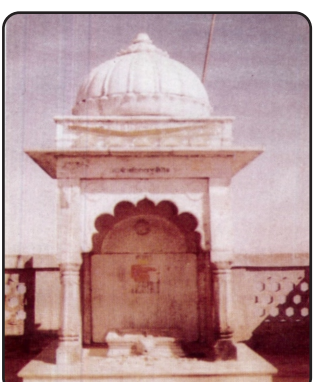

श्री आदिनाथ भगवान–कैलाश पर्वत

श्री शीतल नाथ भगवान–''विद्युतवर कूट''

श्री अनंतनाथ भगवान–''स्वयंभू कूट''

श्री सम्भवनाथ भगवान–''धवल कूट''

श्री वासुपूज्य भगवान–चंपापुरी मंदारगिरी

श्री अभिनन्दननाथ भगवान–''आनन्द कूट''

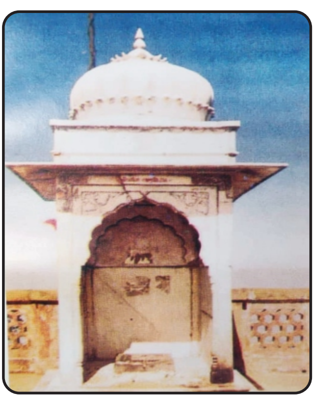

श्री धर्मनाथ भगवान–''सुदत्तवर कूट''

श्री सुमतिनाथ भगवान–''अविचल कूट''

श्री शान्तिनाथ भगवान–''कुन्दप्रभ कूट''

श्री महावीर भगवान–''पावापुर कूट''

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान–''प्रभास कूट''

श्री विमलनाथ भगवान–''सुवीर कूट''

श्री अजितनाथ भगवान–''सिद्धवर कूट''

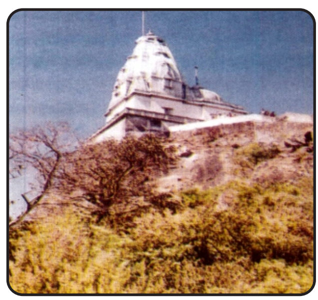

श्री नेमीनाथ भगवान–गिरनार

श्री पारसनाथ भगवान–''स्वर्णभद्र कूट''

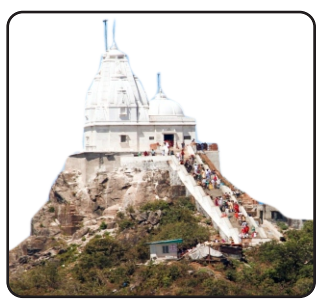

श्री पारसनाथ भगवान जिनालय